सौरभ तेजप्रकाश, ग्यारहवीं, धार

नए साल में...

किरनें घर-घर झूम रही हैं।
सबकी आंखें चूम रही हैं।।
वन में कैसी चहल-पहल है।
पत्ते-पत्ते में हलचल है।।

जब सुगंध भी सही न घर में।
तुम क्यों चिपके हो बिस्तर में?
तुम भी जागो, आंखें खोलो।
खेलो, कूदो, हंसकर बोलो।।

☐ रामनरेश त्रिपाठी
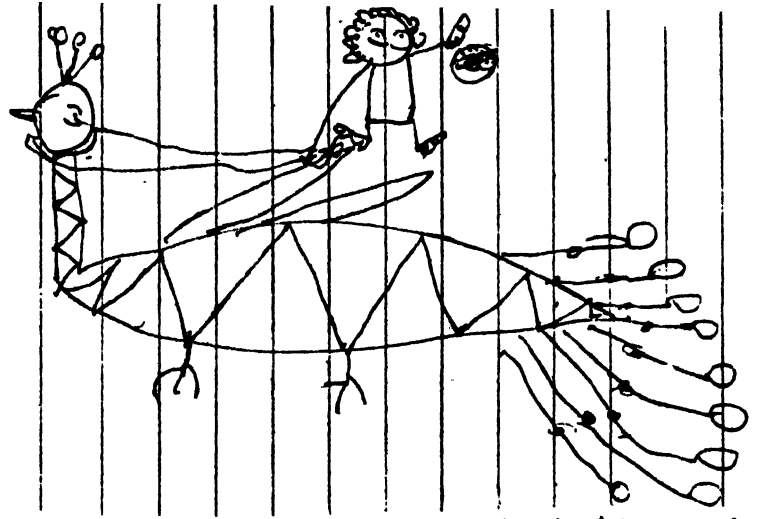
राम संदेश दुबे, चौथी, मानकुंड, देवास

इस अंक में...

बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 5 अंक 7 जनवरी, 1990

संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही

अमा विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

इला. मित्र

का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता :
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

काग़ज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से।
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

आवरण पर

कन्याकुमारी के पास नमक की खेती। इस तरह समुद्री पानी से नमक निकालने का काम भारत के लगभग सभी समुद्र तटीय इलाक़ों में होता है। समुद्र का पानी आकर इन क्यारियों में भर जाता है और फिर सारा पानी सूर्य की गर्मी से धीरे-धीरे भाप बनकर उड़ जाता है—रह जाता है नमक। पर यह काम आमतौर पर दिसंबर से जून के बीच ही हो पाता है।

चित्र : अश्विनी मेहता, साभार : टेम्स एंड हडसन 'दि कोस्ट्स ऑफ इंडिया'।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरा पन्ना

जब मैंने पहली बार रोटी बनाई
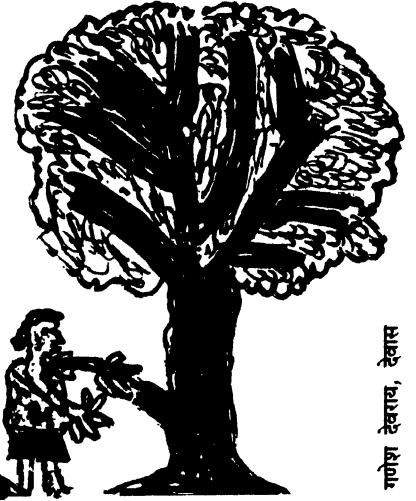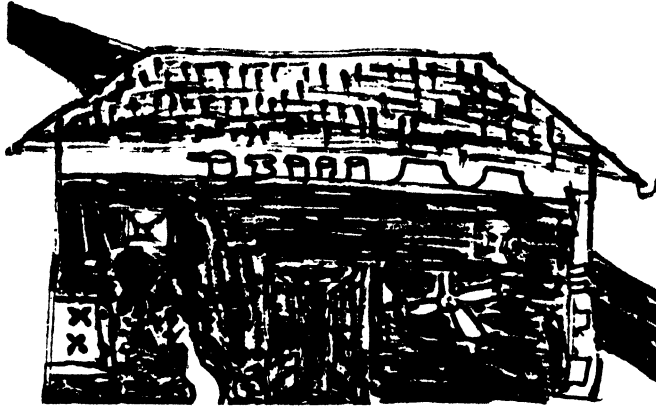
एक दिन जब मेरी मां की तबीयत ख़राब हो गई तो रोटी बनाने का मेरा नंबर आया। मैंने रोटी क्या बनाई, सारे घर को भूखा रखा। कभी पाकिस्तान तो कभी जापान का नक्शा बनाया। मैंने पहली रोटी बेली तो रोटी पूरी की पूरी चकले पर ही चिपक गई। दूसरी रोटी मध्यप्रदेश के नक्शे पर बनी, आखिर लगना तो चाहिए कि मध्यप्रदेश में रहते हैं। यह रोटी तो सही सलामत सिंक गई, पर दूसरी रोटी के तो हाल बुरे हो गए। इधर मैंने रोटी तवे पर डाली उधर से मेरी बहन ने आवाज़ लगाई, दीदी ज़रा इसका अर्थ तो समझा। इधर मैंने अर्थ समझाया, उधर मेरी रोटी काली हो गई। तीसरी रोटी में तो मेरे ही हाल बुरे हो गए। तवा अपने ही ऊपर पटक लिया। खेलने जाने की भी जल्दी थी। तवा गरम होने के कारण पैर जल गया और हम दो दिन तक बिस्तर पर पड़े रहे।

☐ **चित्रलेखा देवधर, तेरह वर्ष, देवास**

नहीं बनाई तकड़ी तो पड़ी लकड़ी

एक बार स्कूल में सर ने कहा, कल सब लोग तकड़ी (तराज़ू) बनाकर लाना और किताब पढ़ना। मैंने न तो तकड़ी बनाई न किताब पढ़ी। अगले दिन मेरे बहुत से लड़के दोस्त हो गए, वो भी तकड़ी बनाकर नहीं लाए थे। बस सर ने कहा, जाओ तकड़ी बनाकर लाना। हम बाहर जाकर कबड्डी खेलने लगे। इतने में हमारी क्लास टीचर आ गईं, वे हमें अंदर ले गईं। सर ने उठाया स्केल और मारना शुरू कर दिया। दो लड़के बाहर ही थे वे मार से बच गए।

☐ **आशीष, आठवीं, नरवर, उज्जैन**

(बालकलम)
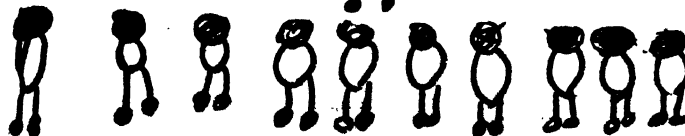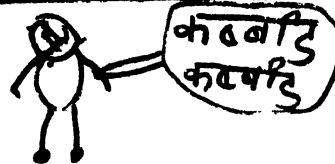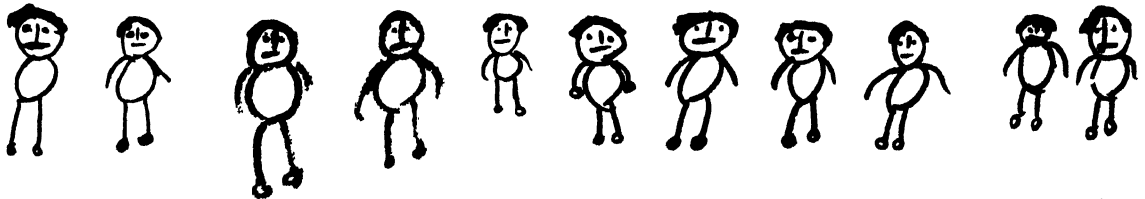
फिरोज़ ख़ान, पांचवीं, पिपरिया

भूल गए तो यह हुआ

एक दिन मैं घर से निकला और रास्ते में मेरे दोस्त ने मुझसे पेन मांगा। मैंने कंपास देखा, कंपास नहीं था। फिर मैं घर गया और घर से कंपास लाया और मेरे दोस्त को पेन दिया। फिर स्कूल गया। स्कूल में देर हो गई थी। सर ने मुझसे कहा कि अपने हाथों से पांच चांटें अपने गाल पर मारो। मैंने नहीं सुना और फिर सर ने मुझे पांच डंडे मारे।

☐ लालचंद नागर, छठवीं, नरवर, उज्जैन
(बालकलम)

कपिल मेहरा, पांचवीं, हबीबगंज

पहेलियां

उरे परे मरे दरे
उधर का माल इधर करे

○

खाए तो स्वाद नहीं
फोड़ो तो गुठली नहीं

○

नाहनी सी टेकरी
पाड़ा-पाड़ी चरे

○

खड़ी करो तो गिर जाए
दौड़ी मीलों जाए
बता दो इसका नाम तो
हम तुम्हें बिठाएं

○

लकड़ी का बैल
पत्थर से लड़े

○

छोटी सी गली में लकड़ी-लकड़ी!

○

मिला रहे तो नर रहे
अलग रहे तो नार
सोने जैसा रंग है
कोई चतुर करे विचार

☐ मध्यमिक विद्यालय,
टिगारिया गोगा, देवास के पाठक

दीदी का पीरियड

चौथा घंटा लगता है
दीदी कक्षा में आती हैं
नमस्कार किया जाता है
मधुर मुस्कान से जवाब मिलता है।

पढ़ाई प्रारंभ होती है
दीदी की बातें अच्छी लगती हैं
आंख पर चश्मा घुंघराले बाल
बढ़ाते हैं दीदी की शान!

दीदी हम बच्चों को प्यार करती हैं
हम बच्चों को दीदी अच्छी लगती हैं!

□ चेतना वाघ, कन्या शिक्षा परिसर,
कुक्षी, धार.
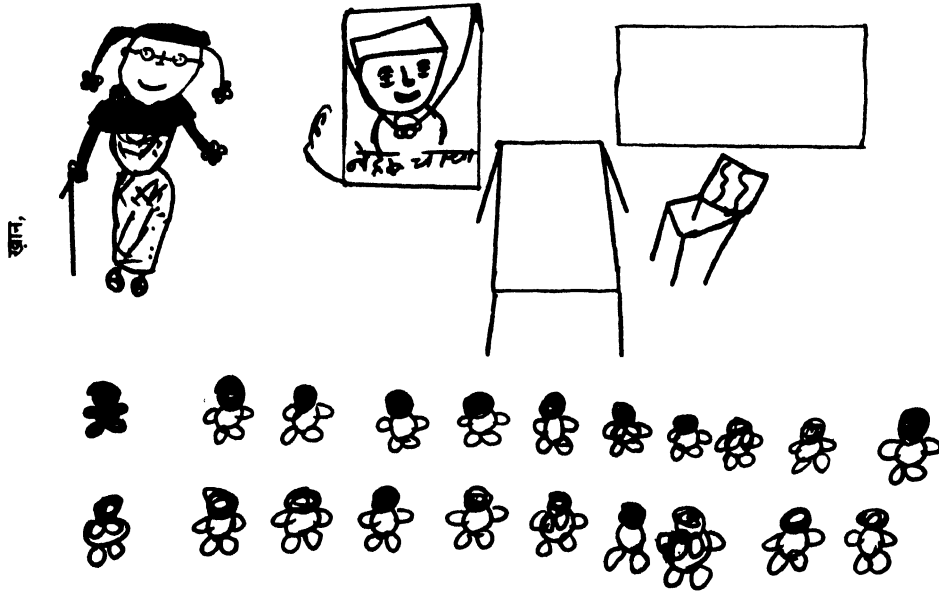
चश्मा रह गया घर पर

मेरा स्कूल सुबह आठ बजे लगता है पर हम सात बजे ही स्कूल पहुंच जाते हैं। कुछ देर गपशप करते रहते हैं। सभी विद्यार्थी प्रार्थना के लिए एकत्रित होकर कतार बनाकर खड़े होते हैं।

एक दिन प्रार्थना खत्म होने पर सभी विद्यार्थी अपनी कक्षा में चले गए। जब हमारी कक्षा छठवीं में संस्कृत पढ़ाने, मैडम आईं और किताब उठाई, तभी अचानक किताब नीचे रख दी और बोलीं कि मेरा चश्मा घर छूट गया है। जो बच्चे मेरा घर जानते हैं, वे जाकर घर से चश्मा लाओ।

मैं एवं मेरा दोस्त मैडम के घर चल दिए। कालोनी में पहुंचकर हम लोग मैडम का घर भूल गए। कालोनी में चक्कर लगाते-लगाते परेशान हो गए तब कहीं जाकर घर मिला। चश्मा लेकर स्कूल पहुंचे तब तक मैडम लिखा चुकीं थीं।

□ जगदीश बारोडिया, छठवीं, देवास
(बालकलम)

अवधेश पाठक, तेरहवर्ष, अमझेरा, धार

रेलगाड़ी

छुक - छुक कर के जाए गाड़ी,
सब के मन को भाए गाड़ी

पटरी पर यह गाड़ी चलती,
बहुत तेज़ यह गाड़ी चलती,
अंदर लगता जैसे धरती चलती।

ऊपर से तो धुंआ निकलता,
जल्दी - जल्दी रास्ता कटता,
समय का तो पता नहीं लगता।

दिन रात यह गाड़ी चलती,
कभी नहीं यह गाड़ी थकती,
लंबा - लंबा सफ़र तय करती।

आकाश में चाहे छाया हो मेघ,
चाल चाहे धीमी हो या तेज़,
चलना है इसके लिए एक खेल।

देश विदेश में है यह गाड़ी
वहां भी लगती सबको प्यारी,
कह लो चाहे इसे रेलगाड़ी।

दूर - दूर पहुंचाए गाड़ी,
बिछड़ों को मिलाए गाड़ी,
यही है अपनी प्यारी गाड़ी।

छुक - छुक कर के जाए गाड़ी,
सब के मन को भाए गाड़ी।

□ आशु खुल्लर, नवमीं, चंडीगढ़

सुनना भी एक कला है!

'ध्यानपूर्वक सुनना' भी एक कला है। यह सुनने की सामान्य क्रिया भर नहीं है। सामान्य क्रिया के रूप में 'सुनने' का मतलब केवल इतना है कि कानों के परदों से बोले गए शब्द टकराते हैं और हमारे दिमाग़ को मालूम पड़ता है कि कुछ आवाज़ आ रही है।

जब इन आवाज़ों, ध्वनियों को दिमाग़ पहचानता है इनका अर्थ निकालता है, विश्लेषण करता है, उनके उपयोग को समझता है, आवश्यकता पड़ने पर याद करके उन्हें पहचान कर उनका उपयोग कर सकने की स्थिति पैदा करता है, तब वास्तव में यह 'सुनने' की घटना घटती है।

अगर हम ठीक से न सुनें, तो बहुत गड़बड़ पैदा हो सकती है। आपसी झगड़ों में तुमने देखा होगा कि कोई कहता कुछ है और सुनने वाला सुनता कुछ और है। बस झगड़ा बढ़ता ही जाता है।

तुम कैसा सुनते हो? आओ खेल खेल में इस बात की जांच करते हैं।

ध्वनि ध्यान से सुनना

आठ-दस दोस्त आंख बंद करके बैठ जाओ। सिर को थोड़ा झुका कर रखो। ऐसा एक निश्चित समय—आधा या एक मिनट—के लिए करो। अब इस दौरान जिसने जो भी आवाज़ सुनी, वह उसके बारे में बताए। वह आवाज़ किस चीज़ की है या कहां से आ रही है यह भी बताए। हां, हर खिलाड़ी किसी नई आवाज़ के बारे में ही बताए।

यह खेल एक और तरीके से खेला जा सकता है। किसी एक को छोड़कर बाकी खिलाड़ी पहले खेल की तरह ही बैठ जाएं। अब बचा खिलाड़ी मुंह से, शरीर के अन्य अंगों से, चीज़ों की टकराहट से, रगड़ या उलट-पुलट से अथवा किसी अन्य तरीके से तरह-तरह की ध्वनियां एक मिनट या एक निश्चित समय तक पैदा करे। शेष खिलाड़ी ध्यान से सुनें। एक मिनट बाद जिसने जो सुना उसके बारे में बताए। ध्यान रहे, हर खिलाड़ी को नई ध्वनि के बारे में बताना है। और अगर कुछ ऐसी आवाज़ें बच जाएं जो किसी ने न बताई हों तो उनके बारे में ध्वनि उत्पन्न करने वाला ही बता दे।

बात का बतंगड़

यह मुहावरा तुमने ज़रूर सुना होगा, पर इसका मतलब क्या है? आओ देखते हैं।

चकमक में से ही किसी कहानी या लेख का एक वाक्य, जिसमें पच्चीस-तीस शब्द हों, चुन लो। वाक्य तुम ख़ुद भी बना सकते हो।

अब सारे खिलाड़ी एक कतार में एक दूसरे से इतनी दूर खड़े हो जाएं कि एक व्यक्ति यदि दूसरे के कान में कुछ कहे तो सुनाई न पड़े।
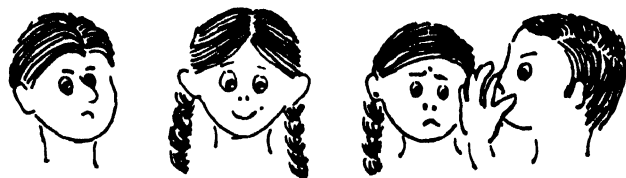
अब चुना हुआ वाक्य पहला खिलाड़ी दूसरे के कान में कहे, दूसरा तीसरे के कान में, तीसरा चौथे के कान में... बस इसी क्रम से कहते जाएं। अंतिम खिलाड़ी जो सुने उसे एक काग़ज़ पर लिख ले और फिर उसे मूल वाक्य से मिलाएं।

इस खेल में पता चलेगा कि ठीक से सुनने या न सुन पाने के कारण अनेक मुंहों से गुजरते हुए जब कोई संदेश अंतिम व्यक्ति तक पहुंचता है, तब वह कितना बदल चुका होता है।

हां, इस खेल में एक बात का ख़्याल रखना जो वाक्य चुना जाए वह सबको पता न हो, कोई एक खिलाड़ी ही चुनने का काम करे।

('बोल व्यवहार' के सौजन्य से)

चींटा

रंग भूरा-काला
छह पैरों वाला
दिखती है देह
तीन मोतियों की माला।

सूंड दो हिलाता
दौड़ा आ जाता
चीनी-मिष्ठानों की
गंध ज्यों ही पाता।

ज्यों ही छेड़ोगे
पकड़ने बढ़ोगे
काटेगा छन-से वह
तुरंत रो पड़ोगे।

जब भी थक जाता
बिल में सुस्ताता
चींटी का चींटे से
भैया का नाता।
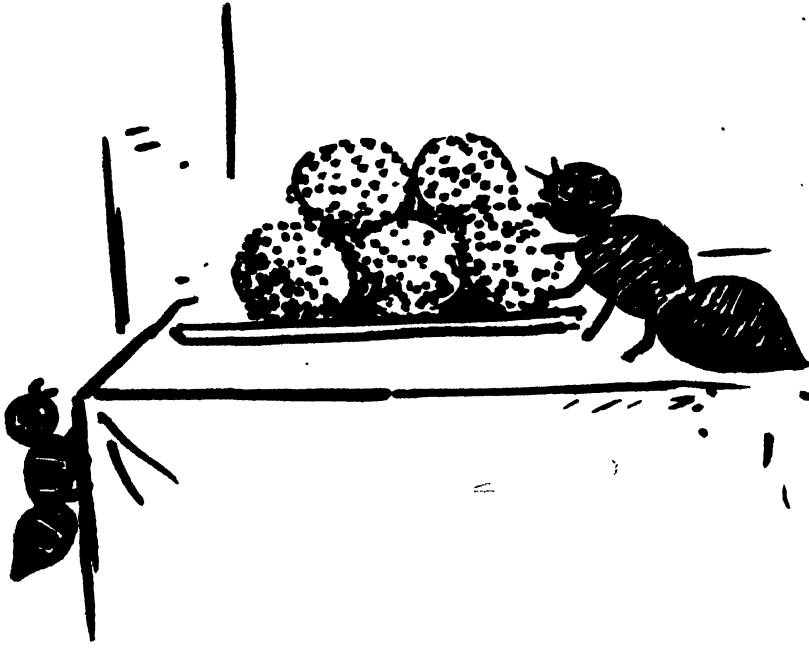
इधर मचलता, उधर उछलता
ऊधम खूब मचाता बछड़ा।

बंधा हुआ रहता खूंटे से
बार-बार रंभाता बछड़ा।

डिस्को की धुन में जैसे
'रंभा-हो-हो-हो' गाता बछड़ा।

टूथपेस्ट करता हो मानो
दिन भर बस पगुराता बछड़ा।

गो मम्मी की पाकर चुम्मी
मस्ती में इतराता बछड़ा।

□ भगवती प्रसाद द्विवेदी
सभी चित्र : सुचिता पवार

नमक की चमक

एक था राजा। उसकी सात बेटियां थी। सातों को वह बहुत लाड़-प्यार करता। एक दिन उसने सोचा मेरी बेटियां मुझे कितना चाहती हैं, पता करना चाहिए! राजा ने बेटियों को बुलाया और हरेक से पूछा, "तुम कितना चाहती हो मुझे?"

पहली ने कहा, "आप मुझे लड्डू की तरह अच्छे लगते हैं।"

दूसरी बोली, "जलेबी की तरह।"

तीसरी ने कहा, "आप तो बर्फ़ी से भी ज़्यादा मीठे लगते हैं।" राजा बहुत खुश हुआ।

ऐसे ही चौथी, पांचवीं और छटवीं लड़कियों ने अपने पिता को मिठाई की तरह प्यारा बताया। जब सातवीं की बारी आई तो वह बोली, "आप तो मुझे नमक की तरह प्यारे हैं।"

राजा यह सुनते ही नाराज़ हो गया और सातवीं लड़की से बोला, "तुम मेरे राज्य से निकल जाओ। तुम्हारी ज़रूरत नहीं है यहां। ऊं हूं... नमक की तरह प्यारा हूं इसे। भला नमक दो कौड़ी की चीज़, उससे मेरी क्या तुलना!"

अब तक तुम्हें भी यह जानी-पहचानी, दादी-नानी की ज़ुबानी सुनी कहानी, याद आ गई होगी! फिर सातवीं लड़की चली गई राज्य के बाहर! एक राजकुमार से हुई शादी! लड़की ने अपने पिता को बुलाया खाने पर। लड़की ने तरह-तरह के व्यंजन परोसे। राजा बैठा खाने। सब व्यंजन मीठे-मीठे। लड़की से पूछा, "क्या बांत है सब मीठा ही मीठा। कोई नमकीन चीज़ नहीं बनी क्या!"

लड़की ने पूछा, "क्यों आप को मीठा अच्छा नहीं लग रहा?"

राजा बोला, "मीठा तो ठीक... पर खाने का मज़ा तो नमक के बिना नहीं आता!"

लड़की बोली, "आप तो नमक को दो कौड़ी की चीज़ कहते हैं।"

यह सुनते ही राजा को सब कुछ याद आ गया और वह बोला, "बेटी मुझे माफ़ कर दो। सचमुच नमक दो कौड़ी की चीज़ नहीं है।"

यह तो थी एक पुरानी कहानी! आज हम इसी दो कौड़ी की चीज़... ओफ़ ओ... माफ़ करना... इस पुरानी कहानी के 'हीरो' यानी नमक के बारे में कुछ गपशप कर रहे हैं। वैसे नमक एक ऐसी वस्तु है जिसका रंग-रूप, आकार, स्वाद हम सब भली भांति जानते हैं। शायद ही हममें से किसी के घर में नमक न रहता हो। तो नमक से हमारी पुरानी पहचान है—आओ इसे और गाढ़ी कर लेते हैं।

नमक, नमक है! उसकी अपनी एक दमक है, चमक है। नमक का अपना इतिहास उतना ही रोचक और विचित्र है जितना खुद नमक। वैसे तो यह कहा जा सकता है कि प्रायः पृथ्वी के धरातल के हरेक हिस्से में नमक मौजूद है। और चाहे वनस्पति हो या जीव-जंतु सभी किसी न किसी तरह इस पर निर्भर हैं।

नमक केवल प्यार को मापने का साधन भर नहीं है। किसी के प्रति वफ़ादारी या बेवफ़ाई जताने के लिए भी हम-तुम नमक का नाम लेते रहते हैं—जैसे नमक हराम या नमक हलाल। और तो और खुशी में फूले न समाने पर या फिर दुःखी होने पर जो आंसू हमारी आंखों से बह निकलते हैं वे भी नमक लिए होते हैं—खारे होते हैं। जब हम मेहनत करते हैं तो उसका सबूत देने वाला पसीना भी खारा होता है।

इस पनचक्की से कभी समुद्र का पानी (अमेरिका में कहीं) एक फैक्टरी में भेजा जाता था, लेकिन अब बंद है। उस पर समुद्री नमक का एक अनूठा आवरण चढ़ गया है।
साभार : टाइम/लाइफ।

बता सकते हो यह सुंदर दृश्य असली है या नकली। नमक से बना है यह! यकीन करोगे!
छाया : हिमांशु बिस्वास

संग्रहालय में रखी समुद्र की एक झाड़ी। झाड़ी पर समुद्री नमक के रवे जम गए हैं।
साभार : नेशनल ज्योग्रेफिक।

हमारे शरीर को स्वस्थ और कार्यशील बनाए रखने में नमक महाशय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि यदि हमारे शरीर से सारा नमक निकाल लिया जाए तो शायद हम दो दिन से अधिक जीवित नहीं रह पाएंगे। अब 'निर्जलन' का नाम तो तुमने सुन ही रखा होगा। किसी कारण से—ख़ासकर पतले दस्त लगने पर—हमारे शरीर में लवण की कमी हो जाती है तो एक गिलास पानी में एक चम्मच शक्कर और चुटकी भर नमक डालकर पीने की सलाह रेडियो क्या, टी.वी. क्या, सब जगह दी जाती है।

इत्तफ़ाक से प्रकृति ने हमारी 'प्रकृति' भी कुछ इस तरह बनाई है कि नमक खाने की इच्छा हमेशा बनी रहती है। इससे यह भी पता चलता है कि सृष्टि के प्रारंभ से ही इसका प्रयोग होता रहा है। हम शायद कल्पना ही कर सकते हैं कि आदिमानव और गुफा मानव, जो हमारे पूर्वज थे, इस साधारण से खनिज को पाने के लिए भयावह पर्वतों, दर्रों, नदियों और भयानक जानवरों से लड़ते-भिड़ते ऐसे स्थानों पर पहुंचते होंगे जहां उन्हें नमक या नमकीन वस्तुएं मिल सकें। आज भी ऐसे आदिवासी समाज हैं जो हमारी दुनिया में केवल तभी आते हैं जब नमक जैसी वस्तु उन्हें चाहिए होती है। छिंदवाड़ा ज़िले में स्थित पातालकोट एक ऐसी ही जगह है जहां आदिवासी सैकड़ों फुट नीचे 'पाताल' में रहते हैं और नमक तथा तेल ख़रीदने ऊपर पहाड़ियों पर लगने वाले हाट में आते हैं। यह मान्यता है कि ऐसे मनुष्य कभी जीवित नहीं रहे होंगे जिन्होंने किसी न किसी रूप में नमक का प्रयोग न किया हो। यदि कोई जाति बिना नमक खाए रही होगी तो भी उसका भोजन ऐसे जंतु रहे होंगे, जिनमें पर्याप्त नमक विद्यमान था।

नमक से मानव का परिचय सबसे पहले कब हुआ, यह ठीक से नहीं कहा जा सकता। लगता है यही है कि नमक आदि सभ्यता के आगमन से पहले ही खोजा जा चुका था।

अनेक लोगों का कहना है कि प्रारंभ में नमक समुद्री पौधों के उन डंठलों पर पाया गया था जो कि समुद्र के बाहर आ गए थे। बहरहाल...!

नमक हमारे खाने का एक अभिन्न अंग तो रहा ही है पर दूसरी ओर मानव जातियों के रीति-रिवाज़ों का भी एक अनिवार्य हिस्सा है। नमक को अनेक लोग बीमारियों से, कुदृष्टि से तथा बुरी हवा से बचाने वाला मानते हैं। ग्रीस (यूनान) के निवासी इसकी पूजा करते थे। यहूदी लोगों में नवजात शिशु पर नमक के लेप करने की धार्मिक प्रथा थी और ऐसा अनुमान था कि इस लेप के हो जाने से बच्चे कुशल और स्वस्थ रहते हैं। रूस में कहीं-कहीं यह प्रथा है कि नव-दंपति अपने घर में प्रवेश करते समय अपने घर के सभी कोनों में नमक का छिड़काव करते हैं। आज भी बहुत से लोग दुर्भाग्य और झगड़ों से बचने के लिए नमक को अपने बाएं कंधे के ऊपर से पीछे की ओर फेंकते हैं। अब यह तुम्हारे सोचने के लिए मसाला है कि इससे कुछ होता-जाता भी है या यूं ही...! वैसे कैंथा या इमली खाते-खाते तुम भी अपने दोस्त को अपनी हथेली पर से नमक उठाकर देने से मना कर देते होगे... यह कहकर कि ऐसा करने से झगड़ा होगा... पर कभी आजमा कर देखा? तुमने यह भी देखा होगा कि विवाह आदि के अवसर पर जब भोज दिए जाते हैं तो सबसे पहले नमक ही परोसा जाता है। घर में हमारी मां खाना खाने के बाद थाली में नमक छोड़ने पर डांटती थीं, तब तो बहुत गुस्सा आता था कि नमक जैसी चीज़ के लिए भी डांट खानी पड़ती है। पर अब लगता है वास्तव में नमक कितनी अमूल्य चीज़ है! नमक न हो तो सारा मज़ा किरकिरा!

इतिहास के पोथों में घुसो तो वहां भी नमक साहब मौजूद! भारतीय चिकित्सा पद्धति के जन्मदाता सुश्रुत के लेखों में भी नमक मिलता है। एबीसीनिया में सिक्कों के रूप में नमक की टिकियों का इस्तेमाल होता था। रोम साम्राज्य में यह वेतन के रूप में दिया जाता था। विलिक्जका नामक एक प्रसिद्ध खान के लिए

बलकान की पहाड़ियों में गर्म पानी के चश्मे, जिनमें कई रसायन घुले रहते हैं। इन चश्मों से यह अंदाज़ मिलता है कि ज़मीन के काफ़ी नीचे शायद तेल व गैस के भंडार हों। गर्मी की वज़ह से भाप बनकर उड़ गए पानी के बाद शेष बचा नमक बर्फ़ की तरह फैला दिखाई दे रहा है।

साभार : टाइम/लाइफ।

अफ्रीका में सहारा रेगिस्तान के पास तिबस्ती पर्वतों के बीच नमक से लदी एक झील। हज़ारों साल पहले इस झील से एक नदी बहती थी, लेकिन अब वह सूख गई है। पानी भी सूखता चला जा रहा है और नमक के टापू बनने लगे। अब रेगिस्तान की मिट्टी झील में पहुंच रही है जिससे पानी और नमक दोनों को ही ढकने का ख़तरा पैदा हो गया है।

साभार : टाइम/लाइफ।

पौलैंड और ऑस्ट्रिया के बीच तो कई लड़ाइयां भी लड़ी गईं। रोम साम्राज्य ने मृत सागर के निकट से रोम तक नमक ले जाने के लिए एक बड़ी सड़क बनवाई थी। इस सड़क पर हमेशा सैनिकों का पहरा बना रहता था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के नमक सत्याग्रह के बारे में तुमने सुना ही होगा।

रसायन शास्त्र की भाषा में नमक सोडियम क्लोराइड है यानी सोडियम और क्लोरीन नामक दो तत्वों के रासायनिक मेल से बनता है। अगर हम एक माइक्रोग्राम भार का नमक का एक कण लें तो उसमें लगभग 10^{16} सोडियम और क्लोरीन के परमाणु होंगे। इसे हम बग़ैर माइक्रोस्कोप की सहायता से तो देख भी नहीं सकते। अगर हम नमक के इस कण के बारे में पूरी तरह जानना चाहते हैं तो हमें कम से कम इसके प्रत्येक परमाणु की त्रिआयामी स्थिति को समझना होगा। सैद्धांतिक रूप से शुद्ध नमक शुष्क हाइड्रोजन और क्लोरीन गैस पर सोडियम की रासायनिक क्रिया द्वारा बनाया जा सकता है। तुम जानते हो क्लोरीन एक अत्यंत ज़हरीली गैस है और सोडियम एक ऐसा तत्त्व है जो पानी के संपर्क में आते ही जलने लगता है। पर इन दोनों से मिलकर ही नमक जैसा उपयोगी पदार्थ भी बनता है।

खनिज शास्त्र में साधारण नमक को हैलाइट के नाम से जाना जाता है। नमक का रवा घनाकार होता है जो अपनी शुद्धता के मान से रंगहीन, पारदर्शी या अर्ध पारदर्शी होता है। यह बहुत ही मुलायम तथा हल्का होता है। प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले खनिज लवण में कई अशुद्धियां होती हैं। और उपयोग में लाने के पहले इन अशुद्धियों को दूर करना आवश्यक होता है। साधारणतः इन अशुद्धियों के कारण ही नमक वायुमंडल की नमी को सोख लेता है। पानी के प्रति इसके अत्यंत प्रेम के कारण ही यह पानी में आसानी से घुल जाता है। पानी का तापमान बढ़ने पर घुलने वाले नमक की मात्रा बढ़ाई जा सकती है। उदाहरण के तौर पर 20 डिग्री सेल्सियस तापमान पर 100 ग्राम पानी में 36 ग्राम नमक घुल जाता है।

नमक के तीन मुख्य स्रोत हैं—समुद्र, खान और नमकीन पानी के कुएं।

समुद्र का पानी समुद्र के किनारे बड़े-बड़े गड़ढ़ों में भर दिया जाता है और सूर्य की गरमी से पानी भाप बनकर उड़ जाता है, नमक के रवे रह जाते हैं। कहीं-कहीं नमक को रेत से अलग करने के लिए बड़े-बड़े कड़ाहों में समुद्र का पानी भर दिया जाता है।

फिर जब बालू नीचे सतह पर बैठ जाती है तब ऊपर का पानी दूसरे कढ़ाव में भरकर नमक बनाने के लिए सुखा लिया जाता है।

खानों से खोदकर जो नमक निकाला जाता है उसे बाद में साफ़ किया जाता है। खानों में नमक की पर्तें होती हैं ठीक उसी प्रकार जैसे कोयले की खानों में होती है।

नमकीन पानी के कुएं भी होते हैं। इन कुओं का पानी नमकीन इसलिए होता है क्योंकि कुओं में आने से पहले पानी किसी नमक की शिला पर से गुज़रता है जहां से नमक घुल कर पानी में मिल जाता है। इन कुओं से भी पानी निकालकर नमक बनाया जाता है।

अब तो बाज़ार में मिलने वाले 'खड़े नमक' और पिसे नमक के अलावा आयोडीनयुक्त नमक भी मिलता है। आयोडीनयुक्त नमक का क्या मतलब है, वह कितना ज़रूरी है। इस पर अलग से गपशप करेंगे!

नमक खाने की चीज़ों को तो स्वादिष्ट बनाता ही है, पर इसके अलावा भी उसके तमाम उपयोग हैं। मछलियां आदि जब डिब्बों में भरकर भेजी जाती हैं तो उनको सड़ने व गलने से बचाने के लिए नमक का प्रयोग किया जाता है। तुमने देखा होगा कि रसोई में रखी तमाम चीज़ों में (यदि वे लंबे समय तक रखी हैं) कीड़े पड़ जाते हैं या इल्ली लग जाती है। पर क्या कभी तुमने नमक में कीड़ा लगते देखा है? अपने इसी गुण के कारण वह खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखने का काम भी करता है। नमकीन पानी से स्नान करने पर शरीर स्वस्थ रहता है। ऐसा कहा जाता है कि हफ्ते

नमक की क्यारियां!

में एक बार नमक से ही दांत मांजने चाहिए। अगर नमक के साथ थोड़ा सरसों का तेल हो तो सोने में सुहागा। दांतों की बीमारी, विशेषकर पायरिया को दूर करने में उपयोगी माना गया है। निर्जलन, बदहजमी आदि रोगों में भी नमक को पानी में मिलाकर पिलाया जाता है। थके हुए पैरों को नमकीन पानी से धोने पर आराम पहुंचता है। हल्के नमकीन पानी से आंखें भी धोई जाती हैं। गला बैठने या ख़राब होने पर कुनकुने नमकीन पानी के गरारे करने की सलाह दी जाती है। आइसक्रीम के ठेलों में बक्से के चारों तरफ नमक भरा जाता है। ऐसे और तमाम उपयोग होंगे नमक के। और इन सबके पीछे होगा एक 'क्यों'? इस 'क्यों' का उत्तर तो पहले तुम्हें ही खोजना है।

नमक, साबुन, काग़ज़, तेल, चमड़ा कमाना, कपड़ों इत्यादि के उद्योगों में भी उपयोग किया जाता है।

तुम सोच रहे होंगे कि हम तो नमक की तारीफ के ही पुल बांधे जा रहे हैं। क्या नमक महाशय फ़ायदा ही फ़ायदा पहुंचाते हैं? नहीं... यह बात नहीं है। नमक के भी कुछ हानिकारक पहलू अवश्य हैं। खाने में नमक की अधिकता होने पर उच्च रक्तचाप (हाइ ब्लड प्रेशर) की बीमारी होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। अगर ज़मीन में नमक की मात्रा अधिक हो जाए तो ज़मीन में खारेपन की समस्या पैदा हो जाती है। वास्तव में यह समस्या कृत्रिम सिंचाई के साथ आई है। नहरों के व्यापक उपयोग की वज़ह से भूमि के भीतर रहने वाला पानी भी अधिक खारा हो जाता है। इससे न केवल उपजने वाली फसल का रासायनिक संतुलन बिगड़ता है वरन् स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी पैदा होती हैं।

बहरहाल... नमक फिर भी नमक है उसकी अपनी एक चमक है, दमक है!

***प्राचीन** रोम में नमक इतना कीमती तथा दुर्लभ था कि जूलियस सीजर अपनी सेना को वेतन के रूप में केवल नमक देता था। अंग्रेज़ी में वेतन के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द "सैलरी" लेटिन भाषा के शब्द 'सैल' से बना है, जिसका अर्थ है—नमक।*

***अगर** सारी दुनिया के समुद्र सूख जाएं तो जो नमक बचेगा, उससे विषुवत् रेखा के चारों ओर एक मील मोटी तथा 180 मील ऊंची दीवार बनाई जा सकती है।*

***बाल्टिक** सागर सबसे अधिक नमक वाला सागर है।*

***पोलैंड** में एक ऐसा नगर है जो पूरा का पूरा नमक की चट्टानों को काटकर बनाया गया है। इस नगर को क्रैको के नाम से जाना जाता है। आमतौर पर नमक पानी में घुल जाता है, लेकिन इन चट्टानों को एक खास प्रक्रिया द्वारा कठोर बना दिया गया है।*
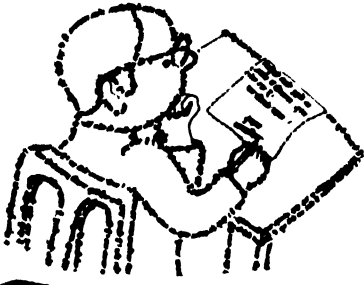
सवालीराम

इस बार जब सवालीराम पकड़ में आए तो हमने उन्हें खूब सारा नमक यानी नमक के सवाल थमा दिए। और फिर वे दो दिन तक नमक के समुद्र में डूबते-उतराते रहे। इस बार नमक के ही बारे में कुछ सवाल-जवाब।

■ ***समुद्र का पानी खारा क्यों होता है?***

☐ वैसे तो तुम लोगों ने दो भाइयों वाली वह कहानी पढ़ रखी होगी, जिसमें मनचाही चीज़ें देने वाली एक चक्की के कारण दोनों में झगड़ा होता है। और फिर एक भाई चक्की लेकर नाव में बैठकर भागता है। और... अच्छा कहानी तो तुम्हें याद है। असली बात बताते हैं। समुद्र का पानी खारा क्यों होता है इसको लेकर कई मत हैं। सबसे अधिक प्रचलित मत यही है कि नदियों से आने वाला पानी ही अपने साथ विभिन्न लवण लेकर आता है। पानी को यह लवण नदियों की मिट्टी से मिलते हैं। समुद्री पानी में क्लोराइड, सल्फेट, बाइकार्बोनेट, कार्बोनेट, ब्रोमाइड, फ्लोराइड आदि लवण मौजूद रहते हैं।

■ ***आइसक्रीम के ठेलों में बर्फ़ के साथ नमक क्यों भरा जाता है?***

☐ अगर हम दूध को आइसक्रीम में बदलना चाहें तो हमें दूध जमाने के लिए 0° सेंटीग्रेड से भी कम तापमान की ज़रूरत होगी। यदि केवल बर्फ़ ही रखा जाए तो तापमान 0° सेंटीग्रेड ही हो पाएगा। परंतु पदार्थों का एक गुण इसमें हमारी मदद करता है। जब किसी भी पदार्थ में कोई अशुद्धि मिलाई जाती है, तो उसका गलनांक सामान्य से कम हो जाता है। बर्फ़ में नमक मिलाने पर मिश्रण का तापमान 0° सेंटीग्रेड से कम हो जाता है। कितना कम होगा यह नमक की मात्रा पर निर्भर करता है। पर हां,—22° सेंटीग्रेड से अधिक कम नहीं होगा।

■ ***पौधों में पानी के अवशोषण में नमक कैसे सहायता करता है?***

☐ दरअसल प्रश्न यों होना चाहिए कि पानी सोखने की क्रिया में लवणों की क्या भूमिका होती है? नमक भी एक प्रकार का लवण है। पौधों में पानी सोखने की क्रिया वास्तव में परासरण का नतीज़ा है। परासरण का मतलब यह है कि एक विशेष प्रकार की झिल्ली में से होकर पानी (या किसी अन्य विलायक) के अणुओं का पार होना। इस तरह की झिल्ली में एक गुण यह होता है कि वह विलायक (जैसे पानी) के अणुओं को तो पार होने देती है परंतु विलेय (जैसे नमक) के अणुओं को नहीं। दूसरी बात यह है कि विलायक के अणु गाढ़े घोल में से हल्के घोल में जाते हैं। यानी यदि झिल्ली के एक तरफ नमक का गाढ़ा घोल और दूसरी तरफ हल्का घोल रखा जाए तो पानी हल्के घोल से गाढ़े घोल में जाएगा।

आमतौर पर पौधे की जड़ों की कोशिकाओं में लवण का घोल बाहर की तुलना में गाढ़ा होता है। इसलिए बाहर का पानी अंदर जाता रहता है।

अब यह तुम बताओ, यदि मिट्टी में बहुत ज़्यादा मात्रा में लवण हो जाएं, तो क्या पानी जड़ों में जा पाएगा?

■ ***गला ख़राब होने पर नमक के गरारे करने को क्यों कहा जाता है?***

☐ आमतौर पर गला ख़राब होने का मतलब है कफ़ जम जाना। कफ़ एक लसलसा पदार्थ है। ऐसा घोल जिसमें पदार्थ के बड़े-बड़े कण विद्युत आवेश के कारण घुले रहते हैं—इमल्शन कहलाता है। कफ़ भी इमल्शन है। यदि इन कणों का आवेश ख़त्म कर दिया जाए तो ये घुलनशील हो जाते हैं। नमक या अन्य लवणों में यह गुण होता है कि वे इस आवेश को ख़त्म कर सकते हैं। इस प्रकार से गले में मौजूद इमल्शन को साफ़ करने में नमक मदद करता है। अब दूध भी एक इमल्शन है। दूध में अगर नमक डालते हैं तो दूध फट जाता है—सोचो क्यों?

■ ***शरीर संरक्षण में नमक क्या करता है?***

☐ अक्सर तुमने देखा होगा कि खाद्य पदार्थ के रूप में मछली को दूर-दूर तक भेजने के लिए नमक में रखकर भेजा जाता है। इसके अलावा तुमने यह भी देखा होगा कि आम, नींबू आदि को नमक के साथ रखने पर वे सड़ते नहीं हैं।

इसका कारण समझने के लिए यह देखना ज़रूरी है कि सड़ना क्या होता है? वास्तव में सड़ने का अर्थ है कुछ जीवाणुओं की क्रिया से रासायनिक बदलाव! नमक का एक गुण यह है कि वह कुछ जीवाणुओं की क्रिया को रोकने की क्षमता रखता है। दूसरी बात भी है। नमक की मौजूदगी में कुछ जीवाणुओं की क्रिया जारी रहती है। परंतु इन क्रियाओं से कुछ ऐसे पदार्थ पैदा होते हैं जो आगे की क्रिया को रोक देते हैं। इसके कारण सड़ने की क्रिया या तो रुक ही जाती है या धीमी पड़ जाती है।

■ ***दाल पकते समय नमक पहले क्यों नहीं डाला जाता?***

☐ परासरण क्रिया कैसे होती है यह तुमने देखा। दाल गलने का अर्थ भी यही है कि उसमें काफ़ी मात्रा में पानी सोख लिया जाता है। पानी सोखने की यह क्रिया भी परासरण द्वारा होती है। यदि पानी में नमक डाल दिया जाए तो बाहर का घोल ज़्यादा गाढ़ा हो जाएगा और दाल के अंदर पानी नहीं जा पाएगा—तो दाल भी नहीं गलेगी।

इस आधार पर तुम एक और सवाल का उत्तर ढूंढ सकते हो—खीर में शक्कर पहले ही क्यों नहीं डाली जाती?

●●●

अपनी प्रयोगशाला

नमक के बारे में तुमने पढ़ा। कुछ और रोचक पहलुओं का पता लगाने के लिए अब कुछ प्रयोग भी कर लें।

नमकीन पानी में क्यों न

तुमने मृत सागर का नाम सुना होगा। मृत सागर का पानी इतना अधिक खारा है कि इसमें कोई जीवित प्राणी नहीं रह सकता। मृत सागर जहां है, वहां की जलवायु अत्यंत गर्म है, इससे वहां पानी का वाष्पीकरण बहुत तेज़ी से होता है। वाष्पीकरण से सिर्फ़ पानी उड़ता है और लवण सागर में ही रह जाते हैं। यही कारण है कि मृत सागर का खारापन बढ़ता ही जा रहा है। मृत सागर के पानी में अन्य सागरों की भांति लवणों की मात्रा भार के अनुसार 2 या 3 प्रतिशत नहीं, बल्कि 27 प्रतिशत है। गहराई में लवण की मात्रा बढ़ती जाती है। इस प्रकार, मृत सागर के पानी में चौथाई अंश लवणों का है।

खारेपन की अधिकता के कारण मृत सागर में एक विशेषता आ गई है, इसका पानी अन्य सागरों के जल से अधिक भारी है; इतना भारी कि इसमें आदमी डूबता ही नहीं। आदमी का शरीर इसके पानी से हल्का है। हमारे शरीर का भार, उसी आयतन के अत्यधिक नमकीन पानी के भार से बहुत कम है। इसीलिए प्लवन नियम के अनुसार आदमी मृत सागर में नहीं डूबता; उसके पानी में वह वैसे ही तैर कर ऊपर आ जाता है जैसे नमकीन पानी में मुर्गी का अंडा। मुर्गी के अंडे का प्रयोग तो हम भी कर सकते हैं।

एक गिलास को पानी से आधा भर लो। अब उसमें एक कच्चा अंडा डालो। अंडा नीचे जाकर तली में बैठ जाएगा। अब अंडे को निकालकर गिलास के पानी में थोड़ा नमक घोलो। अब अंडे को फिर से इस पानी में डालो। देखो क्या होता है... अंडा पानी में तैरने लगा। कारण यह है कि पानी की तुलना में नमकीन पानी अधिक घना है (साधारण भाषा में हम कहते हैं कि अधिक भारी है)।

इस प्रयोग को थोड़ा मज़ेदार बना सकते हो। गिलास का पानी कुछ कम कर लो। अब गिलास में धीरे-धीरे थोड़ा सादा पानी डालो ताकि नमकीन पानी और सादे पानी के दो तल बन जाएं। अब इसमें अंडा डालकर देखो।

इस प्रयोग को और भी कई तरीकों से किया जा सकता है। अंडे की जगह कटोरी इस्तेमाल करो।

ककड़ी गई सुकड़

ककड़ी खाने में स्वादिष्ट लगती है। तुमने भी खूब खाई होंगी। कभी उसके साथ प्रयोग भी किया है? ककड़ी को छील लो और उसके दो टुकड़े कर लो। अब एक गिलास में सादा पानी भरो और एक में खूब नमकीन पानी। अब दोनों गिलासों में ककड़ी का एक-एक टुकड़ा डाल दो। कुछ घंटे बाद दोनों का अवलोकन करो। सादे पानी वाली ककड़ी ज्यों की त्यों ताज़ा दिखाई देगी और नमकीन पानी वाली ककड़ी...! उसका तो बुरा हाल होगा। वह टेढ़ी-मेढ़ी होकर सुकड़ गई होगी! सोचो तो ऐसा क्यों होता है?
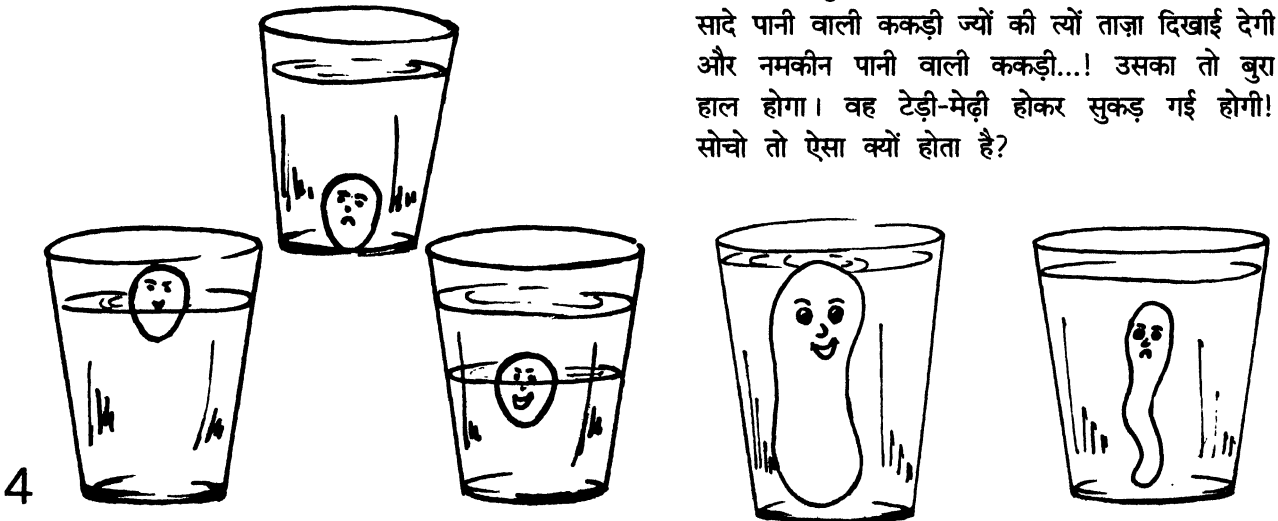
नमक जाए कहां रे

एक गिलास को पानी से लबालब भर लो। अब अगर हम तुमसे कहें कि इसमें एक बड़ा चम्मच भर नमक डाला जाए तो क्या होगा? तुम शायद यही कहोगे कि, क्या होगा, गिलास से थोड़ा पानी बाहर गिर जाएगा! कहते तो तुम कुछ-कुछ ठीक ही हो, पर आओ करके देख लेते हैं। ध्यान रखना कि नमक चम्मच से एक साथ मत डालना। या तो छेद वाली नमक दानी से या फिर किसी छलनी में भरकर धीरे-धीरे डालना।

वास्तव में होगा यह कि सारा नमक पानी में समा जाएगा और गिलास से पानी की एक बूंद भी नहीं गिरेगी। यह पानी की अपनी संरचना का कमाल है। पानी के अणुओं के बीच कुछ स्थान खाली रहता है। नमक को बनाने वाले अणु इसी खाली स्थान में जाकर जम जाते हैं। इससे घोल का आयतन नहीं बढ़ता।
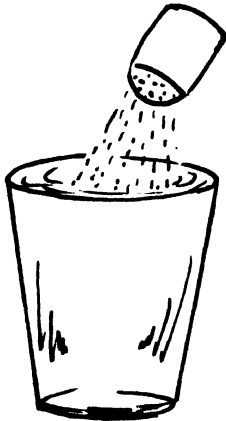
धागा जाए जल, लटका रहे नट

गिलास में थोड़ा पानी लो और उसमें दो चम्मच नमक घोलो। अब धागे का लगभग 15 सेंटीमीटर लंबा एक टुकड़ा लो और उसे इस घोल में कम से कम घंटे भर डुबोकर रखो। घंटे भर बाद धागे को किसी चिमटी या पतली सींक की मदद से बाहर निकालो और सूखने के लिए रख दो। जब धागा अच्छी तरह सूख जाए, तब उसके एक सिरे पर एक नट बांध दो। नट की जगह कुछ और भी ले सकते हो, पर वह अधिक भारी न हो। अब दूसरे सिरे को चिमटी से पकड़कर या अन्य किसी तरह से हवा में लटकाओ। अब धागे के ऊपरी सिरे में आग लगा दो। धीरे-धीरे सारा धागा जल जाएगा पर नट वैसे ही लटका रहेगा। सोचो... सोचो ऐसा क्यों होता है? वास्तव में यह नमक के
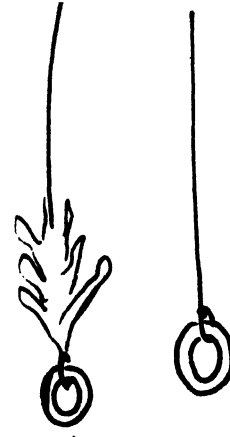
अणुओं का कमाल है। धागे के चारों ओर नमक के अणु एक चेन जैसी संरचना करते हैं, इसीलिए धागा तो जल जाता है पर नमक की चेन से नट लटका रहता है।

नमक से भेजो गुप्त संदेश

तुम अपने किसी दोस्त को गुप्त संदेश भेजना चाहते हो—लिखकर! ज़रूर भेजो—नमक तुम्हारी मदद करेगा!

किसी कटोरी में थोड़ा पानी लो और उसे धीरे-धीरे गरम करो। गरम करते समय उसमें थोड़ा-थोड़ा नमक मिलाते जाओ। जब नमक घुलना बंद हो जाए तो घोल को ठंडा कर लो। अब ब्रश या तीली को इस घोल में डुबोकर सफ़ेद काग़ज़ पर वह संदेश लिखो जो भेजना चाहते हो। जब काग़ज़ सूख जाए तो उसे अपने दोस्त के पास पहुंचा दो। पर हां, अपने दोस्त को यह पहले ही बता देना कि संदेश पढ़ने के लिए इस काग़ज़ पर कार्बन पेंसिल की नोक रगड़नी होगी। ज्यों-ज्यों वह पेंसिल रगड़ेगा, त्यों-त्यों संदेश उभरने लगेगा। अब फिर सवाल वही है ऐसा क्यों होता है? इसके उत्तर के लिए तुम शक्कर या सोडा या ऐसे ही किसी अन्य पदार्थ का घोल बनाकर प्रयोग दोहराओ और फिर अपने अवलोकनों पर विचार करो।

अधिक खारापन क्या करता है?

तुमने 'नमक की चमक' लेख में पढ़ा होगा कि ज़मीन में खारेपन की समस्या पैदा हो जाने पर उपजने वाली फसल पर प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे ज़मीन बंजर भी हो जाती है। इसे समझने के लिए भी एक प्रयोग कर सकते हैं।

दो छोटे पौधे चुनो। एक की जड़ों में सादा पानी डालो और दूसरे की जड़ में खूब नमकीन पानी। तीन-चार दिन तक नियमित रूप से पानी डालते रहो। देखो... क्या होता है?

घेंघा और आयोडीनयुक्त नमक

खड़े और पिसे नमक के अलावा एक तीसरे तरह के नमक यानी आयोडीनयुक्त नमक की बहुत चर्चा है। वास्तव में इसका संबंध घेंघा या गलगंड नामक रोग से है। गलगंड रोग आयोडीन की कमी से होता है और नमक को आयोडाइज़्ड करके इस कमी की पूर्ति करने का एक राष्ट्रीय अभियान चल रहा है।

हमारी गर्दन में एक ग्रंथि है थायरॉइड। इस ग्रंथि के फूल जाने को ही घेंघा या गलगंड हो जाना कहा जाता है। इस रोग का यही एक मात्र लक्षण है कि गर्दन और चेहरे में सूजन के कारण विकृति आ जाती है।

थायरॉइड ग्रंथि से निकलने वाला हार्मोन थायरॉक्सीन बारह सप्ताह की गर्भ अवस्था से लेकर दो साल की अवस्था तक बच्चे के मस्तिष्क के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस दौरान ही मस्तिष्क का करीब 90 प्रतिशत विकास पूरा हो जाता है। थायरॉइड ग्रंथि के ठीक से काम न करने के कारण विकास संबंधी गड़बड़ियां पैदा हो सकती हैं और उनके परिणाम भी घातक हो सकते हैं, जैसे वृद्धि धीमी हो जाना, हड्डियों के परिपक्व होने, मांसपेशियों के क्रियाशील होने और मानसिक विकास में देरी। विभिन्न स्तरों पर मानसिक अपंगता, मानसिक कमज़ोरी, मांसपेशियों में अधिक वृद्धि और यौन से संबंधित गड़बड़ियां भी हो सकती हैं।

थायरॉइड ग्रंथि को ठीक-ठाक ढंग से काम करने के लिए आयोडीन की एक विशिष्ट मात्रा की ज़रूरत होती है। अगर इस विशिष्ट मात्रा में कमी या अधिकता आती है तो उक्त गड़बड़ियां हो सकती हैं। थायरॉइड ग्रंथि ठीक से काम करती रहे इसके लिए प्रतिदिन केवल 150 माइक्रोग्राम आयोडीन पर्याप्त है। एक अनुमान के अनुसार 70 साल के जीवन में एक औसत व्यक्ति के लिए कुल मिलाकर एक बड़ा चम्मच या 5 ग्राम आयोडीन की मात्रा ही पर्याप्त होगी। आमतौर पर यह मात्रा पानी और सब्ज़ियों के माध्यम से हमारे शरीर में पहुंचती रहती है। किंतु कुछ जगहों पर पानी के तेज़ बहाव के कारण उसमें आयोडीन की मात्रा बहुत कम हो जाती है। यही पानी न केवल पीने बल्कि खेतों में भी इस्तेमाल किया जाता है, इससे सब्ज़ियों के माध्यम से पहुंचने वाली मात्रा भी पर्याप्त रूप में नहीं होती है। भारत में हिमालय क्षेत्र सबसे अधिक घेंघा प्रभावित क्षेत्रों में रहे हैं। जंगल के निरंतर कटने के कारण पानी के तेज़ बहाव और ऊपरी मिट्टी के बह जाने से आज देश के 22 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश घेंघा से ग्रस्त हैं। हाल ही में इसमें दिल्ली भी शामिल हो गया है। दूसरी तरफ समुद्र आयोडीन के भंडार हो गए हैं, क्योंकि आखिर पानी तो बहकर समुद्र में ही जाता है।

तुम सोच रहे होगे कि यह सब तो ठीक, पर नमक से इसका क्या संबंध है। नमक का संबंध घेंघा के उपचार से है। यह देखा गया कि जिन इलाकों में आयोडीन की कमी हो रही है या आयोडीन की पर्याप्त मात्रा नहीं मिल पा रही है, वहां आयोडीनयुक्त तेल या नमक खाने को दिया जाए। कई कारणों से नमक को आयोडीनयुक्त करना ज़्यादा व्यावहारिक है। एक तो नमक ऐसी वस्तु है जिसे हर व्यक्ति अपने भोजन

(पृष्ठ 19 पर जारी)

नमक का सबक़

क्या एक चुटकी भर नमक गाड़ी भर बारूद से अधिक शक्तिशाली हो सकता है? शायद तुम्हारा उत्तर 'न' में हो। पर वास्तव में ऐसा हुआ—समय था हमारे स्वतंत्रता आंदोलन का। चुटकी भर नमक ने अंग्रेज़ी शासन की जड़ें हिला दी थीं।

हमारा भारत वर्षों तक राजा-रजवाड़ों की आपसी लड़ाई और फिर मुग़ल साम्राज्य के अधीन रहा। और फिर अंग्रेज़ भी आए व्यापारी बनकर, बाद में वे यहां के सब कुछ बन बैठे। फिर 1857 में क्रांति का बिगुल बजा, धीरे-धीरे स्वतंत्रता संग्राम ने ज़ोर पकड़ा और सदियों से गुलाम देश के लोग उठ खड़े हुए। यह सारी कहानी तुम कभी न कभी अपनी इतिहास की किताबों में पढ़ चुके होंगे। नमक ने भी इस आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सन् 1835 में एक आयोग ने सिफारिश की थी कि भारत में बना नमक भारत में बेचा जा सकता है। नमक क़ानून के अनुसार नमक बनाने का एक मात्र अधिकार केवल सरकार को था। अन्य कोई व्यक्ति नमक बनाए तो सरकार नमक जब्त कर सकती थी और उसे छह माह की सज़ा भी दे सकती थी। नमक की वास्तविक कीमत पर 2400 प्रतिशत कर भी लगा दिया गया था।

अपने साप्ताहिक 'यंग इंडिया' में गांधीजी ने लिखा—'पानी के बाद नमक ही एक ऐसी चीज़ है जिस पर कर लगा कर सरकार लाखों भूखे, बीमार और असहाय लोगों तक पहुंच सकती है... नमक एकाधिकार का परिणाम है विनाश—यानी उन हज़ारों स्थानों का बंद होना जहां हज़ारों लोग अपने लिए नमक बनाते थे। वह सरकार ग़ैर क़ानूनी है जो लोगों का नमक छीनकर उस पर कर लगाकर फिर मंहगी कीमत पर बेचती है। लोगों को पूरा अधिकार है कि जो उनका अपना है उसे वे ले लें।'

देश अंग्रेज़ी शासन के अत्याचार से तंग आ चुका था और बहुत सारे लोग स्वतंत्रता के पक्षधर बन गए थे। इसी बीच जब अमृतसर में जालियांवाला बाग हत्याकांड हुआ तो लोग रोष से भर उठे।

गांधी जी ने देश भर में असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया। उन्होंने सरकारी संस्थाओं और विदेशी कपड़े का बहिष्कार करने का निश्चय किया। जगह-जगह विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। पर कहीं-कहीं यह आंदोलन शांतिपूर्ण ढंग से चला और कहीं-कहीं हिंसा भी भड़क उठी। गांधी जी ने तत्काल आंदोलन रोक दिया। गांधी जी साबरमती के किनारे आश्रम बनाकर रहने लगे थे। स्वतंत्रता के हामी लोग अपने-अपने तरीके से मंज़िल की ओर जा रहे थे। इनमें एक तरफ कांग्रेस थी तो दूसरी तरफ क्रांतिकारी। उधर साबरमती आश्रम में गांधी जी ऐसे मुद्दे की खोज में थे जिससे इस विदेशी सरकार की बुराइयां और अन्याय स्पष्ट हो जाएं और देश में एक लहर चल पड़े। बहुत सोच विचार कर गांधीजी ने नमक को ही अपना हथियार बनाया!

नमक क़ानून ने सभी भारतवासियों को चाहे वे ग़रीब हों या अमीर, बूढ़े हों या युवा, शिक्षित हों या

अनपढ़ प्रभावित किया था।

गांधी जी आश्रम में अपने पच्चीस-साथियों के साथ रहते थे। उन सबका अहिंसा में विश्वास था। गांधी जी ने तय किया कि नमक सत्याग्रह आरंभ किया जाए। योजना यह थी कि गांधी जी किसी स्थान पर जाकर नमक उठाएंगे और इस तरह नमक का क़ानून तोड़ देंगे। उन्होंने यह भी तय किया कि पहले सिर्फ़ आश्रम वासी ही इस सत्याग्रह में शामिल होंगे, क्योंकि वे सब अहिंसावादी हैं और सत्याग्रह के बारे में विचारों से भली भांति सहमत हैं!

सत्याग्रह शुरू करने के पहले गांधी जी ने वायसराय लार्ड अर्विन को एक पत्र भी लिखा। पत्र में उन्होंने सत्याग्रह करने के कारणों का विस्तार से ज़िक्र किया। पत्र में इस बात की भी चर्चा की गई कि कैसे भारत में दुनिया का सबसे मंहगा प्रशासन चलता है। और इस सबका भार किसान पर पड़ता है। और उसे जीने के लिए जो नमक चाहिए उस पर भी आपने कर लगा दिया। इसका सबसे अधिक बोझ उसी पर पड़ेगा। अपने पत्र में उन्होंने और भी कई बातों की चर्चा की और कहा कि अगर इस पत्र पर अनुकूल प्रतिक्रिया न दिखाई तो मैं अपने आश्रम के साथियों के साथ आगे बढ़कर नमक क़ानून का उल्लंघन करूंगा। मेरे बाद हज़ारों-लाखों लोग इस काम को करने के लिए आगे आएंगे।

और फिर जैसी कि उम्मीद थी वायसराय ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। गांधी जी ने अपने सत्याग्रह की तैयारी शुरू कर दी। गांधी जी ने एक सभा में कहा, "मैं आपसे एक क़दम आगे जाने के लिए कहता हूं। यदि भारत के लाखों गांवों में से प्रत्येक गांव से दस आदमी आगे आएं और नमक बनाएं, नमक क़ानून का उल्लंघन करें तो आपके विचार में यह सरकार क्या कर सकती है? बहुत ही क्रूर और निरंकुश तानाशाह भी शांतिपूर्ण ढंग से विरोध करने वालों के समूहों को तोप के मुंह पर नहीं रख सकता। यदि आप केवल अपने को थोड़ा भी सक्रिय कर लें, मैं विश्वास दिलाता हूं कि हम बहुत ही थोड़े समय में इस सरकार को थका देंगे।"

12 मार्च, 1930 की सुबह साबरमती के आश्रम से एक ऐतिहासिक यात्रा शुरू हुई। अठहत्तर सत्याग्रहियों में भारत के हर प्रांत के व्यक्ति थे। कुछ धनी भी थे, कुछ ग़रीब भी। शिक्षित भी थे तो अनपढ़ भी—वे सब भारत को स्वतंत्र देखना चाहते थे।

इसे डांडी मार्च का नाम दिया गया। यात्रा के दौरान भी आश्रम की दिनचर्या को चालू रखा गया। हर दिन लगभग 20 किलोमीटर की यात्रा की जाती। सत्याग्रही सुबह की ठंडक में चलते और दोपहर को किसी एक गांव में आराम करते। फिर शाम को चलते और रात अन्य गांव में बिताते। वे खुले में सोते और सादा भोजन करते। गांव वालों से कहा गया कि वे सत्याग्रहियों के भोजन और रहने-खाने पर कोई ख़र्च न करें। गांधी जी कहा करते, "केवल धन से स्वराज्य नहीं मिलेगा। अगर उससे मिलता तो मैं बहुत पहले ले लेता। उसके लिए तुम्हें अपना ख़ून देना होगा।" डांडी मार्च केवल एक राजनैतिक अभियान ही नहीं था। इसका ध्येय लोगों को शिक्षा देना भी था। जहां-जहां गांधी जी ठहरते, स्थानीय नेता उनसे मिलकर सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने के लिए विचार-विमर्श करते जिसे वे अपने-अपने क्षेत्रों में नमक क़ानून के उल्लंघन के बाद शुरू करने वाले थे।

धीमे डांडीमार्च ने, जिसमें 24 दिन लगे, केवल

भारत के लोगों का ही नहीं बल्कि सारे संसार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। पांच अप्रैल की शाम को सारे सत्याग्रही डांडी पहुंच चुके थे।

छह अप्रैल, 1930 की सुबह गांधी जी समुद्र किनारे पहुंचे और देखते ही देखते उन्होंने एक मुट्ठी नमक उठा लिया। थोड़ी ही देर बाद विभिन्न सत्याग्रहियों द्वारा लगभग पांच सौ किलोग्राम नमक जमा कर लिया गया। पुलिस आई उसने नमक ज़ब्त कर लिया। लेकिन पुलिस के जाते ही गांववालों ने नमक फिर से इकठ्ठा कर लिया।

नमक क़ानून टूट चुका था। इस आंदोलन का अगला क़दम था नमक बनाना। सारे देश में ऐसे परचों की बाढ़ आ गई जिनमें समुद्री पानी से नमक बनाने का तरीक़ा दिया हुआ था। समुद्र के किनारे तो लोग नमक बनाते ही, दूर रहने वाले लोग भी नमक बनाते।

वास्तव में नमक एक प्रतीक भर था—विरोध का। आंदोलन फैलता गया। अंग्रेज़, लोगों को गिरफ़्तार करके जेल में डालते गए। कुछ ही दिनों में क़रीब एक लाख लोग जेलों में ठूंस दिए गए।

इस आंदोलन ने व्यापक रूप धारण कर लिया था। नमक क़ानून का उल्लंघन तो मात्र ब्रिटिश दासता को अस्वीकार करना था। लोगों ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना शुरू कर दिया। ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए विभिन्न कर देने से मना करने लगे। इतना ही नहीं सरकारी कर्मचारियों का बहिष्कार—सामाजिक बहिष्कार शुरू हो गया था। गांवों में उन्हें खाने-पीने की चीज़ें बेची ही नहीं जातीं। प्रशासन क़रीब-क़रीब ठप्प हो गया था। गांधी जी भी एक दिन गिरफ़्तार कर लिए गए। पर उनका उद्देश्य पूरा हो चुका था।

उन्होंने कहा, 'सविनय अवज्ञा आंदोलन जनता में वह शक्ति उत्पन्न करेगा जिससे राष्ट्र अपने उद्देश्य में सफल हो सकेगा। उद्देश्य है स्वतंत्रता।'

नमक ने न केवल अंग्रेज़ों को बल्कि भारतीयों को भी एक सबक़ सिखाया था।

सभी चित्र : मृणाल मित्र, सौजन्य — चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट

(पृष्ठ 16 का शेष)

का ज़रूरी हिस्सा समझता है और दूसरे वह सस्ता भी है। निश्चित रूप से आयोडीनयुक्त नमक घेंघा रोग को रोकने में मदद करता होगा, पर इसके आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक पहलुओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

एकाएक कई सारे धन्ना सेठ आयोडीनयुक्त नमक बाज़ार में बेचने के लिए उतर आए हैं। आयोडाइज़्ड नमक के पैकेट तुमने भी बाज़ार में बिकते देखे होंगे। सामान्यतौर पर यह नमक दो रुपए किलो बिकता है, फिर भी यह सामान्य नमक से कम से कम एक रुपया महंगा है। और गांवों में हाट आदि में बिकने वाले नमक की तुलना में तो यह और मंहगा है। ऐसे में मात्र दो रुपए लेकर परचून की दुकान पर पहुंचा व्यक्ति कौन-सा नमक खरीदेगा तुम खुद समझ सकते हो।

घेंघा से निपटने के लिए एक राष्ट्रीय घेंघा निवारण कार्यक्रम भी बनाया गया है। कोई भी क्षेत्र जहां की 30 प्रतिशत या उससे अधिक आबादी घेंघा रोग से ग्रस्त हो उसे इस कार्यक्रम के तहत घेंघा प्रभावित क्षेत्र घोषित कर दिया जाता है। वहां गैर आयोडीनयुक्त नमक की बिक्री पर रोक लगा दी जाती है। परंतु इसके परिणाम अज़ीबो-गरीब हो सकते हैं जैसा कि शहडोल, मध्यप्रदेश में हुआ। प्रतिबंध लगने के बाद वहां सादा नमक पहले की कीमत से ज़्यादा लेकिन आयोडीनयुक्त नमक से कम कीमत पर चोरी छुपे बेचा गया। व्यापारियों ने मुनाफ़ा कमाया। इसका एक और पहलू है। सामान्य नमक पर प्रतिबंध के कारण उस क्षेत्र में रह रहे अप्रभावित लोगों को भी आयोडीनयुक्त नमक खाना पड़ता है। अब इसमें यह भी संभावना होती है कि इन लोगों को किसी अन्य स्त्रोत से पर्याप्त आयोडीन मिल ही रही हो। ऐसे में आयोडीन की कमी के बदले अधिकता की समस्या पैदा हो सकती है। इससे भी घेंघा हो सकता है।

मध्यप्रदेश में बारह ज़िले–शहडोल, सीधी, सरगुजा, रायगढ़, खरगौन, बैतूल, खण्डवा, होशंगाबाद, छिंदवाड़ा, मंडला, बिलासपुर तथा जबलपुर – घेंघा रोग से ग्रस्त पाये गए हैं। पहले तो उन ज़िलों में सामान्य नमक की बिक्री पर आंशिक प्रतिबंध था पर अब पूर्ण प्रतिबंध है।

वास्तव में हमारे पास कोई ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे आयोडीनयुक्त नमक मात्र उन लोगों को उपलब्ध कराया जा सके जिनको उसकी ज़रूरत है और वह भी साधारण नमक की कीमत पर! वरना हमें एक नए नमक सत्याग्रह के बारे में सोचना होगा।

चलते-फिरते तथ्य

दीपंकर गोस्वामी
इंडस्ट्रियल डिजाइन सेंटर, बम्बई.

क्या तुम यकीन करोगे?

- कुछ ऐसे जीव है जो आजू-बाजू (पार्श्वचाल) से चलते हैं।
- एक पक्षी ऐसा भी है जो उल्टा (पीछे की ओर) उड़ता है।
- कुछ मछलियां भी उड़ती हैं।
- 96 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़नेवाला जानवर भी है।
- कुछ मछलियां ज़िंदगी भर तैरती रहती हैं।
- कुछ मछलियां ज़मीन पर भी चलती हैं।
- ऐसी छिपकली भी हैं जो उड़ती हैं।

तुम इन जीवों के बारे में जानने की कोशिश करो। न केवल नाम, बल्कि उनके व्यवहार के बारे में भी पता करो। यदि सभी उत्तर नहीं ढूंढ पाते हो तो परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। बस इस लेखमाला की अगली कड़ियों का इंतज़ार करो। आगे... आगे चलो होता है क्या...!

आम तौर पर एक जगह से दूसरी जगह जाने की क्रिया को हम 'चलन' या चलना कहते हैं। चूंकि हम पैरों से चलते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि पैर ही चलने का एकमात्र साधन हैं। परंतु ऐसा नहीं है, चलने के कई तरीके हैं...

चलना, ढुलकना, मंडराना, ग्लाइड करना, धकेलना, झूलना, रेंगना, ऊंची उड़ान, सरपट दौड़ना, सरकना, डुबकी लगाना, दौड़ना, सांप जैसे चलना (पार्श्वचाल), चक्कर काटना, बहना, घूमना, इल्ली की तरह लहरों में चलना, कूदना, गाड़ी में बैठकर सफ़र करना... आदि चलने के ही कुछ तरीके हैं। ये तरीके दुनिया के विभिन्न जीव-जंतु अपनाते हैं।

क्यों न इस अद्भुत दुनिया की सैर की जाए! इस अंक से हम एक लेखमाला शुरू कर रहे हैं जो तुम्हें इस दिलचस्प दुनिया की सैर कराएगी। इसमें तुम विभिन्न जीव-जंतुओं की चाल के बारे में जानोगे। इसके अलावा हर लेख में तुम एक खिलौना बनाना भी सीखोगे। तो तैयार हो जाओ सैर के लिए!
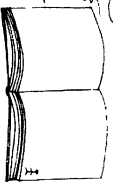
एक खेल खेलें

एक पुरानी कॉपी लो। उसके हरेक पेज के निचले बाएं कोने में निम्न चित्रों में से क्रमशः एक चित्र बनाओ। यानी पहले पेज पर पहला, दूसरे पर दूसरा...। पर एक बात का ध्यान रखना चित्रों की जगह हर पेज पर एक ही हो। जब सभी चित्र बन जाएं तो कॉपी को ऊपर दर्शाए तरीके से पकड़कर उसके पेजों को एक-एक करके तेज़ी से छोड़ते जाओ। चित्रों को देखते रहो क्या होता है? सोचो, ऐसा क्यों होता है? तुम खुद ऐसी कोई अन्य चित्रमाला तैयार करो।

भूगर्भ की यात्रा

अब तक तुमने पढ़ा...

प्रोफ़ेसर लिडेनब्रॉक को एक पुरानी किताब मिली। उस किताब से एक पुराना पर्चा मिला। उसमें एक संदेश था जो प्रोफ़ेसर तथा उनके सहायक के लिए पहेली बन गया। जब वह पहेली सुलझी तो उसमें भूगर्भ यात्रा के लिए आदेश थे। प्रोफ़ेसर ने यात्रा पर जाने की तैयारी शुरू कर दी। पर उनका सहायक अधिक उत्सुक नहीं था। अब आगे पढ़ो...।

अंत में मैंने निश्चय किया कि मैं इस यात्रा के लिए अपना थैला आदि बांध लूं। लेकिन घंटे भर बाद ही मेरे मस्तिष्क से यह बनावटी उत्तेजना दूर हो गई और एक बार फिर मेरे पुराने संदेह जाग्रत हो उठे।

"यह सिर्फ पागलपन है," मैंने सोचा, 'चाचाजी गलती कर कर रहे हैं।'

नदी के किनारे टहलते-टहलते मैं शहर से बाहर देहात की ओर निकल आया। मैं आलतोना की तरफ जा रहा था इस आशा में कि शायद ग्रॉबेन से भेंट हो जाए। और शीघ्र ही मैंने उसे उसके घर में देखा। मैंने उसे बाहर बुलाया।

"अरे! तुम मुझसे मिलने के लिए ही आए थे?" लेकिन जब उसने मुझे इतनी दुःखी अवस्था में देखा तो बोली, "क्या बात है आख़िर?"

मैंने अपने दुःख का सारा कारण उससे कह सुनाया।

"यह एक महान् यात्रा होगी," ग्राबेन बोली, "हां मनुष्य को इसी तरह के आश्चर्यजनक काम करके ही प्रसिद्धि प्राप्त करनी चाहिए।"

"क्या ग्राबेन! तुम सोचती हो कि मैं जाऊं ही?"

"हां, मैं भी तुम्हारे साथ चलना चाहती हूं पर मैं ठहरी ग़रीब लड़की। तुम्हारी सहायता तक भी न कर सकूंगी।"

"सच?"

"बिलकुल सच।"

"ग्राबेन!" मैंने उत्तर दिया, "देखूंगा यदि कल भी तुम यही कहोगी।"

"कल भी, मैं यही कहूंगी जो मैं आज कह रही हूं।"

हम चुपचाप, हाथों में हाथ दिए, साथ ही साथ टहल रहे थे। मैं यात्रा में होने वाली घटनाओं से उत्तेजित
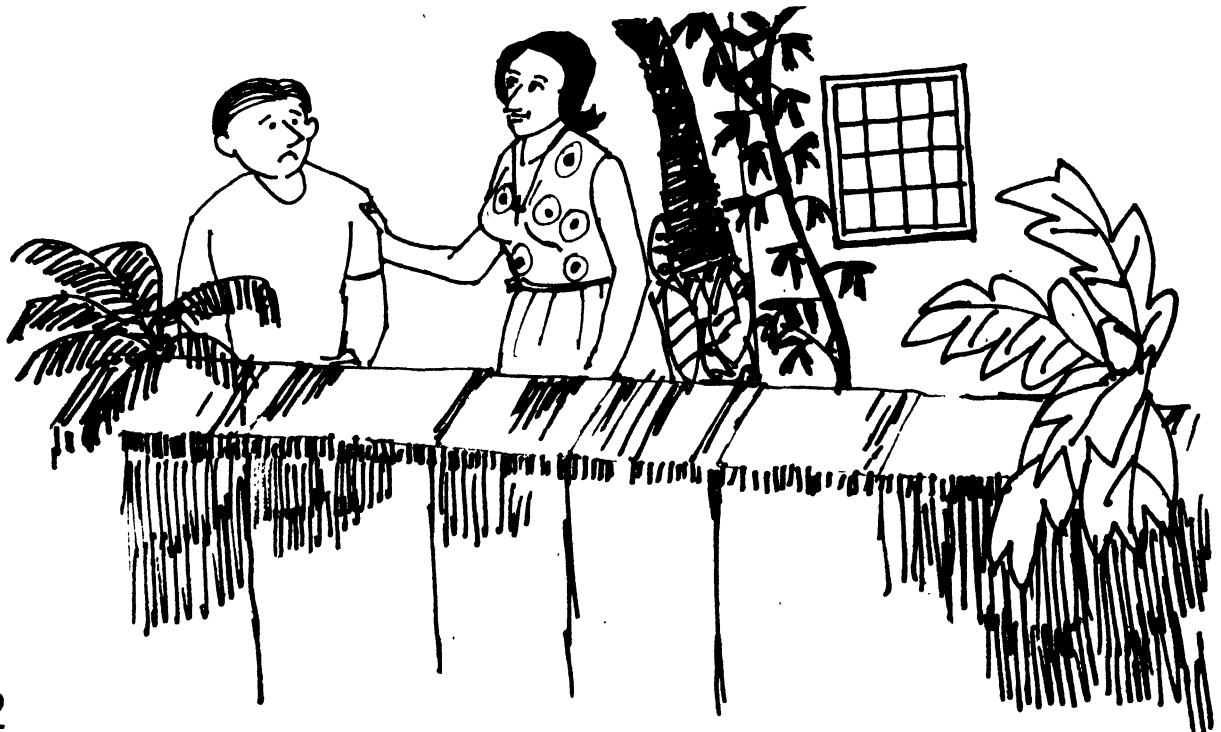
होकर थकावट का अनुभव कर रहा था।

"फिर भी," मैंने सोचा जुलाई शुरू होने में अभी कई दिन हैं। तब तक बहुत-सी ऐसी बातें हो सकती हैं जो कि चाचाजी के विचारों में परिवर्तन ला दें।

शाम को मैं घर देर से पहुंचा। मैं समझा कि सब ठीक-ठाक होगा और चाचा जी हमेशा की तरह बिस्तर पर जा चुके होंगे।

लेकिन मैं चाचा जी की उत्तेजना को तो भूल ही गया था। मैंने उन्हें कई आदमियों के साथ सामान लदवाकर घर में रखवाते हुए देखा। बड़ी चीख-पुकार और भाग-दौड़ मचा रक्खी थी उन्होंने।

मुझे देखते ही पुकारने लगे, "आओ जल्दी, फ़ौरन भागते हुए चले आओ। बड़े अजीब हो तुम भी। अभी तक सामान बांधना शुरू नहीं किया, मेरे काग़ज़ भी ठीक से नहीं रक्खे, कुछ भी तो नहीं किया तुमने।"

मैं बिलकुल चुपचाप खड़ा रहा। मुझे आश्चर्य था। आश्चर्य ही नहीं, बहुत अधिक आश्चर्य। अंत में मैं बोल उठा, "क्या सच ही हम जा रहे हैं?"

"हां, अवश्य ही हम जा रहे हैं। मेरी सहायता क्यों नहीं करते आकर?" वे बोले।

"हम सचमुच ही जा रहे हैं?"

"हां भाई हां, परसों सुबह हमें जाना है।"

मैं और अधिक नहीं सुनना चाहता था। बिना और कुछ सुने ही मैं अपने छोटे कमरे में घुस गया।

अब संदेह की कोई गुंजाइश न थी। चाचा जी ने सारी दोपहर यात्रा के लिए आवश्यक वस्तुएं ख़रीदने में ही बिता दी थी। मेज़ें, कुर्सियां, ज़मीन सभी कुछ तो सामान के मारे ढकी पड़ी थीं। इतनी चीज़ें थीं कि कम से कम दस आदमी लादकर चल पाते।

किसी तरह से रात गुज़री। सुबह मैंने सुना, कोई पुकार रहा था। मैंने तय कर लिया था कि दरवाज़ा कतई नहीं खोलूंगा। लेकिन शीघ्र ही मुझे ज्ञात हो गया कि वह ग्रॉबिन थी और बड़े प्यार से मुझसे दरवाज़ा खोलने का अनुरोध कर रही थी।

मैं मन में यह सोचते हुए बाहर आया कि शायद ग्रॉबिन का विचार बदल गया है। लेकिन जैसे ही वह मुझ से मिली, बोल पड़ी "अरे मैं देख रही हूं कल से तुम ज़्यादा ठीक हो। रात में खूब अच्छी तरह सोये हो तुम?"

"रात में अच्छी तरह सोया हूं।"
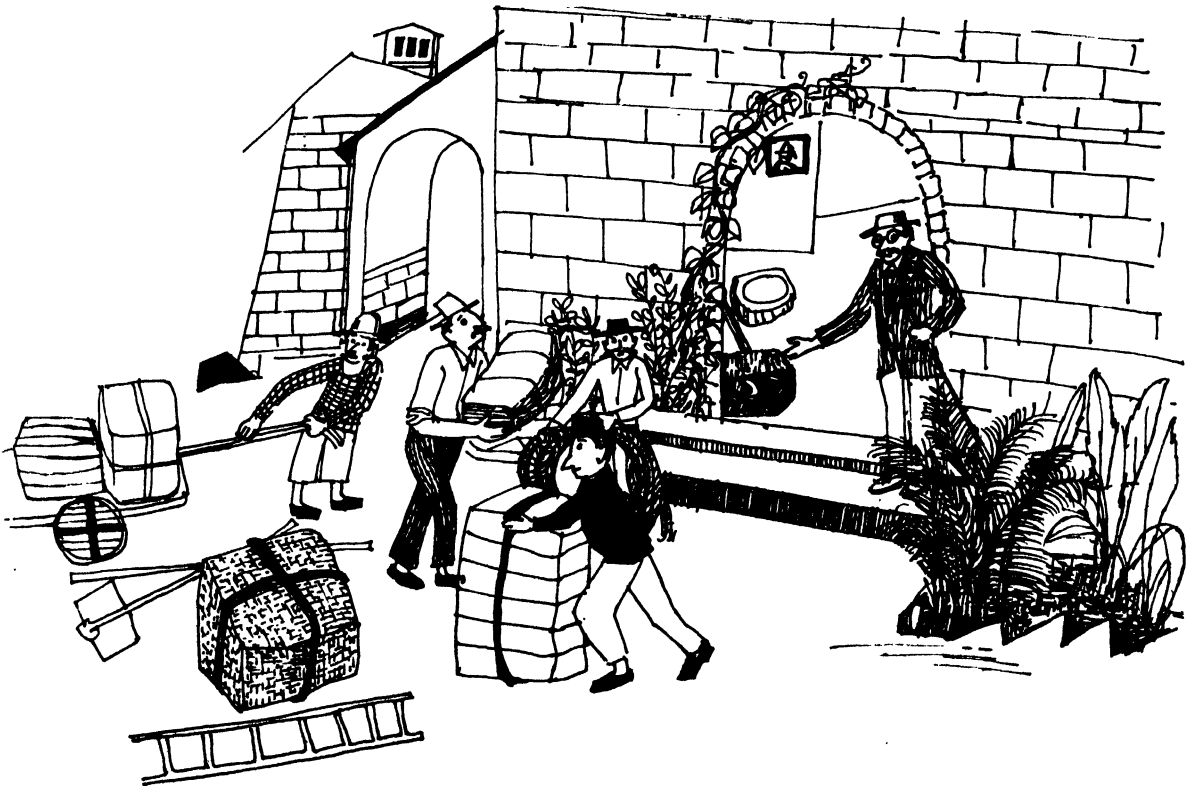
मैंने अपने को शीशे में देखा। मुझे ताज्जुब हुआ कि मैं वैसा थका नहीं लग रहा था जैसा मैं सोच रहा था।

ग्रॉबेन बोली, "मैंने प्रोफ़ेसर लिडेनब्रॉक से बहुत देर तक बातचीत की। वे ऐसे आदमी हैं जो किसी चीज़ से नहीं डरते। तुम्हें इसका गर्व होना चाहिए। उन्होंने अपनी सारी योजनाएं और उनसे क्या-क्या आशाएं हैं, सब कुछ बता दिया है मुझे। उन्हें अपने काम में अवश्य ही सफलता मिलेगी। उनके साथ ही साथ तुम भी बहुत प्रसिद्ध हो जाओगे। और सुनो, जब तुम वापस लौट आओगे तब तुम्हें पूरी स्वतंत्रता मिल जाएगी बोलने की।"

एकाएक वह रुक गई। मैं समझ गया कि वह क्या कहना चाहती थी। उसके शब्दों ने मुझमें एक जोश-सा भर दिया था। फिर भी मुझे उस यात्रा पर जाने की कल्पना भी नहीं थी। ग्रॉबेन को साथ लेकर मैं प्रोफ़ेसर के कमरे में जा पहुंचा।

"चाचाजी," मैं बोला, "क्या जाने का बिल्कुल ही निश्चय कर लिया गया है?"

"क्या तुम्हें कोई शक़ है इसमें?"

"जी नहीं," इस डर से कि वे कहीं गुस्से में न आ जाएं। मैं बोला, "मैं सिर्फ़ इतना जानना चाहता हूं कि इतनी जल्दी हमें क्यों करनी चाहिए?"

बेशक़ समय के कारण ही।"

"अभी तो सिर्फ 26 मई है और अब से जून के अंत तक के बीच—"

"बेवकूफ़ लड़के, तुम समझते हो कि हम आइसलैण्ड द्वीप तक बड़ी आसानी से चले जाएंगे। मैं तुम्हें जहाज़ कम्पनी के दफ़्तर में ले चलूंगा और तुमने सुना होगा कि कोपेन हेगेन और रेकियाविक के बीच सिर्फ एक जहाज़ ही चलता है और वह भी हर महीने की 22 तारीख को ही।"

"अच्छा!"

"और फिर यदि हम 22 जून तक की प्रतीक्षा करेंगे तब तो बहुत देर हो जाएगी। इसलिए हमें जल्दी से जल्दी तैयार हो जाना चाहिए। जाओ, जल्दी से सामान बांधो।"

अब कुछ कहने को न था। अतः मैं अपने कमरे को जाने वाली सीढ़ियों पर चला गया। ग्रॉबेन भी मेरे साथ हो ली। वह यात्रा के लिए सभी ज़रूरी सामान रखने लगी। वह ऐसी शांत थी जैसे कि मैं सिर्फ़ किसी दूसरे शहर में ही जा रहा होऊं। वह मुझे शांतचित्त होकर यात्रा के लाभ समझाने लगी। मुझे यह बिल्कुल नहीं भाया। उसे छोड़ते हुए मुझे बड़ा गुस्सा मालूम हो रहा था।

अंत में सब चीज़ें तैयार हो गईं और मैं नीचे उतरा।

दोपहर तक घर में और अधिक सामान आना शुरू हो गया—बंदूकें, औजार और सभी तरह के वैज्ञानिक उपकरण आदि। मार्था की समझ में कुछ भी न आया कि क्या होने जा रहा था।

"क्या मालिक पागल हो गए हैं?" उसने पूछा। मैंने उससे सहमत होने के ढंग से सिर से हिलाया।

"क्या ये दूर जा रहे हैं? और आपको भी साथ लिये जा रहे हैं?"

मैंने फिर उसी तरह सिर हिलाया।

"कहां जा रहे हैं?"

मैंने ज़मीन की ओर इशारा कर दिया।

"क्या रसोई के नीचे जा रहे हैं आप लोग?"
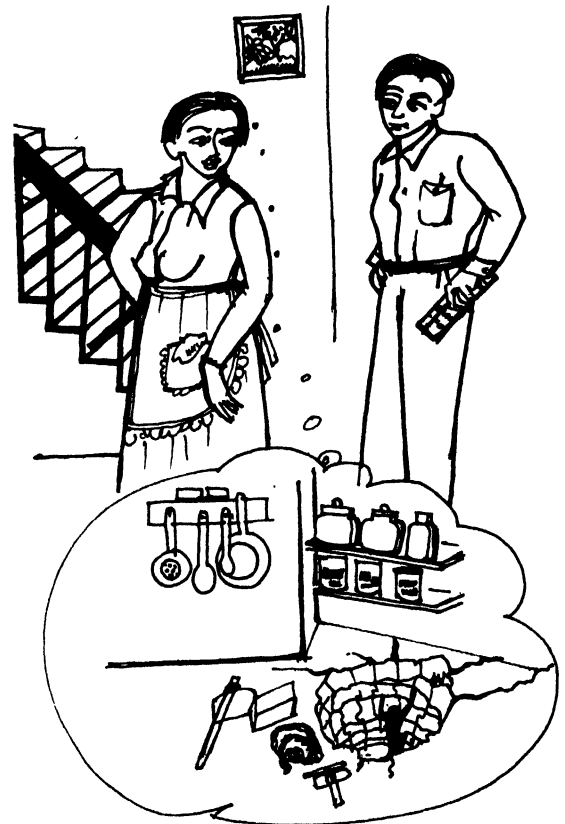
"नहीं," मैं बोला, "उससे भी अधिक नीचे।"

शाम हुई।

"कल सुबह," चाचा जी बोले "हम छः बजे चल पड़ेंगे।" रात में दस बजे अपने बिस्तरे पर मैं इतने भारीपन से लेटा हुआ था जैसे मैं पत्थर का बना होऊं।

रात भर मैं स्वप्न देखता रहा। स्वप्न में देखा कि प्रोफ़ेसर मुझे ज़मीन के अंदर खींचते ही लिए चले जा रहे हैं। भूगर्भ में पहाड़ों पर से मैं बराबर गिरता ही चला जा रहा था। गिरने की गति बढ़ती ही जा रही थी और लगता था कि रुकूंगा ही नहीं।

मैं पांच बजे ही जग गया। थका और डरा हुआ था। उठकर खाने के कमरे में चला गया और देखा कि चाचा जी मेज़ पर रक्खे हुए ढेर-सा भोजन बहुत जल्दी-जल्दी खाए जा रहे थे। यह देख मैं अपने को और भी अधिक बीमार जैसा अनुभव करने लगा। लेकिन ग्राबिन वहीं थी और मैं चुप था। पांच बजे एक बड़ी गाड़ी हमें रेलवे स्टेशन ले चलने के लिए दरवाज़े पर आ खड़ी हुई। चाचा जी के सामान से वह बिल्कुल ही भर गई थी।

"तुम्हारा थैला कहां है?" चाचा जी ने पूछा।

"बिल्कुल तैयार है," मैं बुझे हुए-से स्वर में बोला।

"जल्दी करो और इसे नीचे लाओ, नहीं तो हमारी गाड़ी छूट जाएगी।"

चाचा जी ग्राबिन से बिदाई ले रहे थे। फिर वह मेरी ओर घूमी और बोली, "जाओ जाओ, पर जब तुम लौटोगे तो तुम्हारी पत्नी मिल जाएगी।"

फिर मैं गाड़ी में जा बैठा। दरवाज़े पर खड़ी मार्था और ग्राबिन ने अंतिम बार विदाई देने के लिए पुकारा। दूसरे क्षण ही मैं चाचा जी के साथ रेलवे स्टेशन के मार्ग पर पहुंच गया।

मैं अब संदेह और गुस्से से भरा हुआ था। लेकिन सुबह की ताज़ी हवा और रेल की यात्रा ने मेरें मन को कुछ शांति सी दी। मैं खिड़की से झांक कर वृक्षों और मैदानों को देखने लगा। गाड़ी तेज़ी से चलती जा रही थी, अपनी मंजिल की ओर।

लेकिन प्रोफ़ेसर की उत्तेजना के मारे गाड़ी बहुत धीमी गति से चलती हुई मालूम पड़ रही थी। हम उस डिब्बे में थे तो अकेले ही, लेकिन दोनों ही चुप थे।

तीन घंटे बाद हमारी ट्रेन समुद्र के किनारे स्थित एक स्टेशन पर रुकी। यहां से कोपेन हेगेन तक नाव पर जाना था। अपने सामान की कोई चिंता हमें न थी। ट्रेन से निकालकर वह नाव पर चढ़ाया गया।

अंत में रात के दस बजे हम अपनी जगहों पर जा बैठे और लगभग पौन घंटे बाद नाव चली।

जूलेवर्न के उपन्यास *'ए जर्नी इन टू दी सेंटर ऑफ अर्थ'* का अनुवाद। अनुवादक : प्रभात किशोर मिश्र। सौजन्य : इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। सभी चित्र : शोभा घारे।
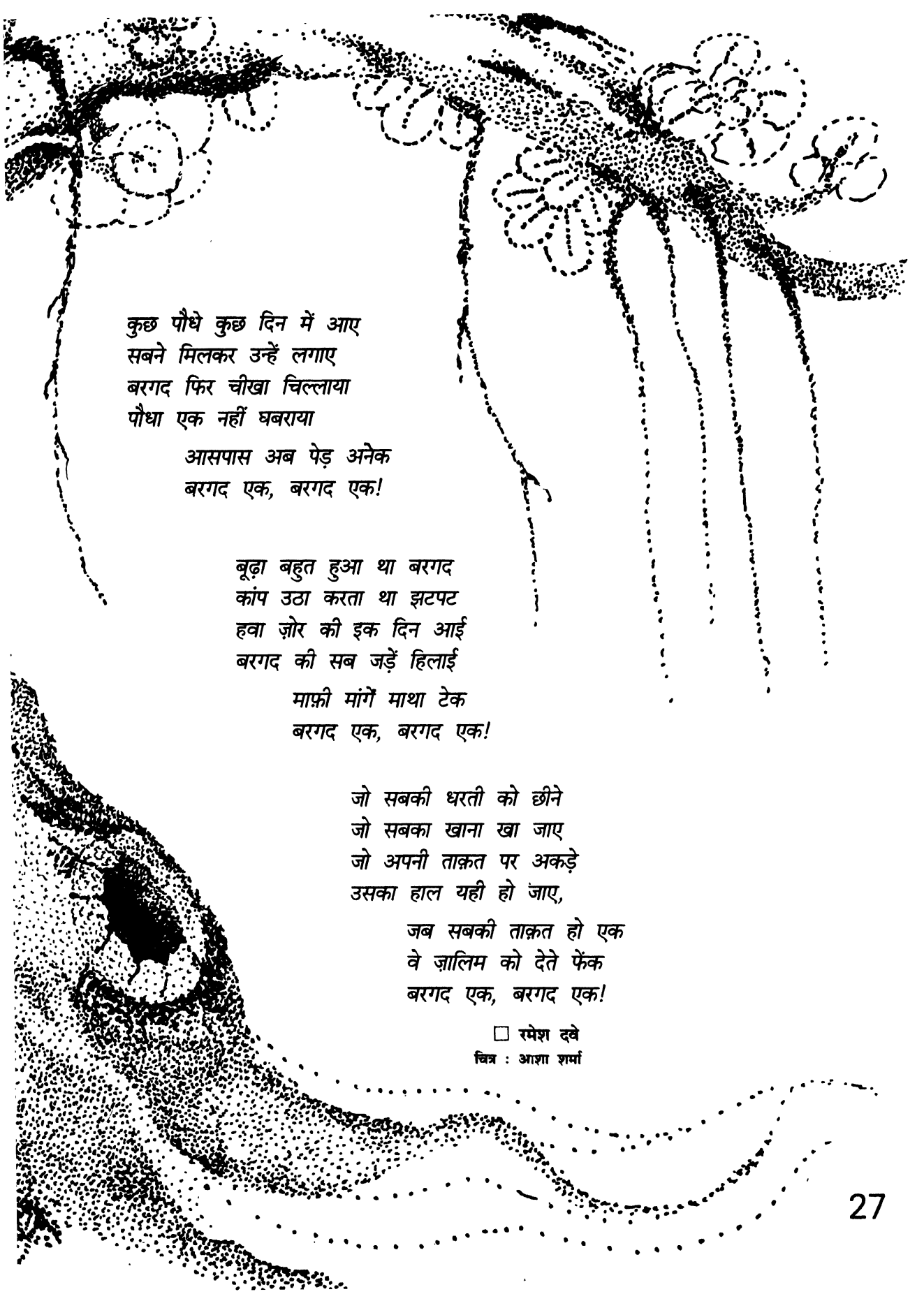
बरगद एक

बरगद एक, बरगद एक
पेड़ों का राजा-सा बनकर
बरगद एक खड़ा था तनकर
कई जड़े थीं उसकी ऐसी
फ़ौज खड़ी हो असली जैसी
आसपास ना पौधा एक
बरगद एक, बरगद एक!

एक दिवस एक छोटा पौधा
घीसू ने था पास में रोपा
बरगद चीखा, चिल्लाया पर
घीसू ने जाने क्या सोचा,
आसपास अब पौधा नेक
बरगद एक, बरगद एक!

कुछ पौधे कुछ दिन में आए
सबने मिलकर उन्हें लगाए
बरगद फिर चीखा चिल्लाया
पौधा एक नहीं घबराया

आसपास अब पेड़ अनेक
बरगद एक, बरगद एक!

बूढ़ा बहुत हुआ था बरगद
कांप उठा करता था झटपट
हवा ज़ोर की इक दिन आई
बरगद की सब जड़ें हिलाई

माफ़ी मांगें माथा टेक
बरगद एक, बरगद एक!

जो सबकी धरती को छीने
जो सबका खाना खा जाए
जो अपनी ताक़त पर अकड़े
उसका हाल यही हो जाए,

जब सबकी ताक़त हो एक
वे ज़ालिम को देते फेंक
बरगद एक, बरगद एक!

□ **रमेश दवे**

चित्र : आशा शर्मा

तुम भी बनाओ
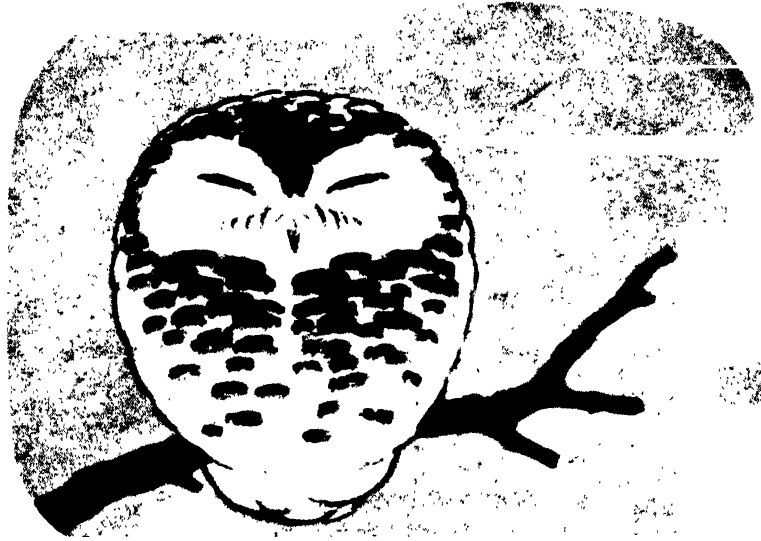
जब संसार नींद में डोला
अंधकार में उल्लू बोला
चपटे गोल-गोल मुंह वाला
आगे लगा चोंच का भाला!

□ रुद्रदत्त मिश्र
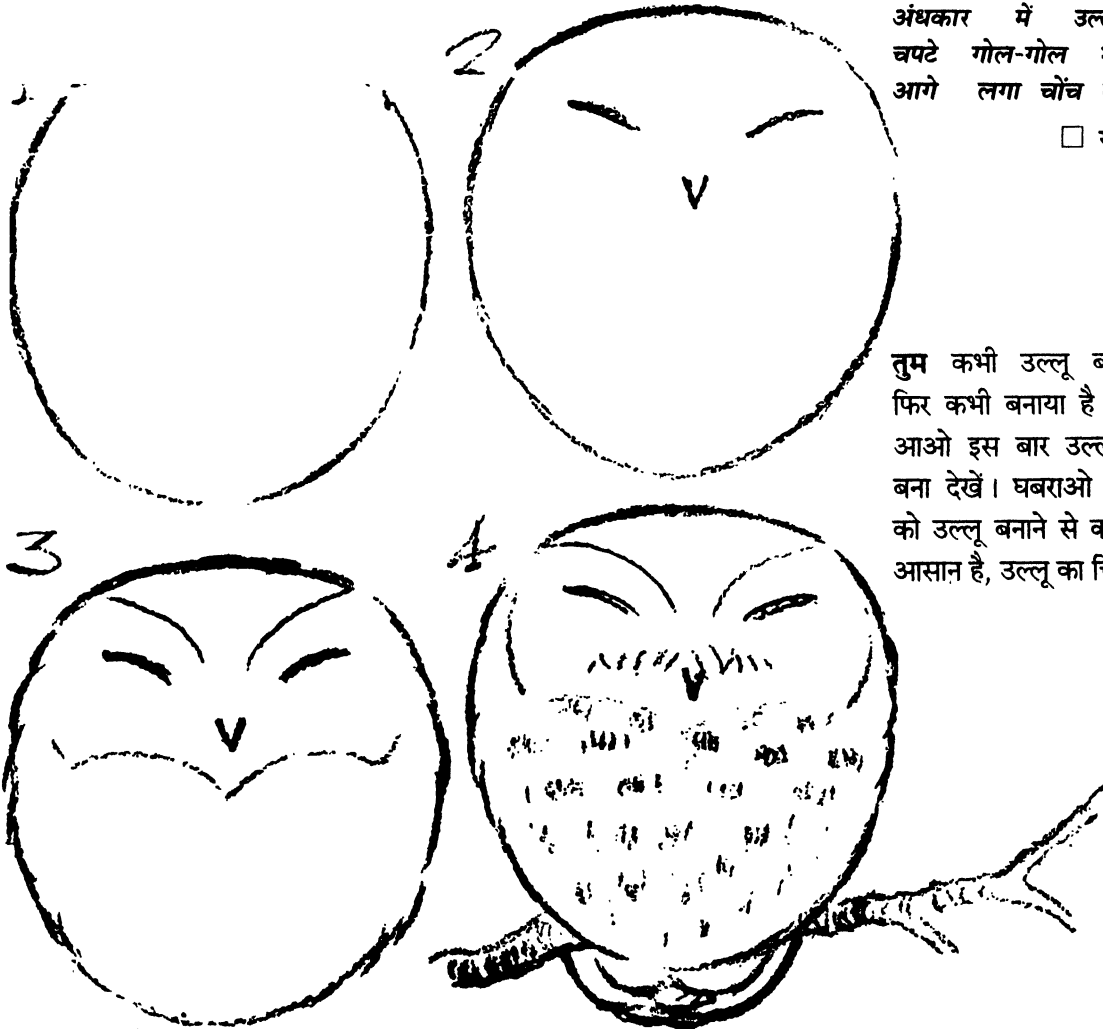
तुम कभी उल्लू बने हो या फिर कभी बनाया है किसी को! आओ इस बार उल्लू का चित्र बना देखें। घबराओ मत, किसी को उल्लू बनाने से कहीं अधिक आसान है, उल्लू का चित्र बनाना!

2

3

4

सुरखाब (चकवा-चकवी)

☐ अरविंद गुप्ते
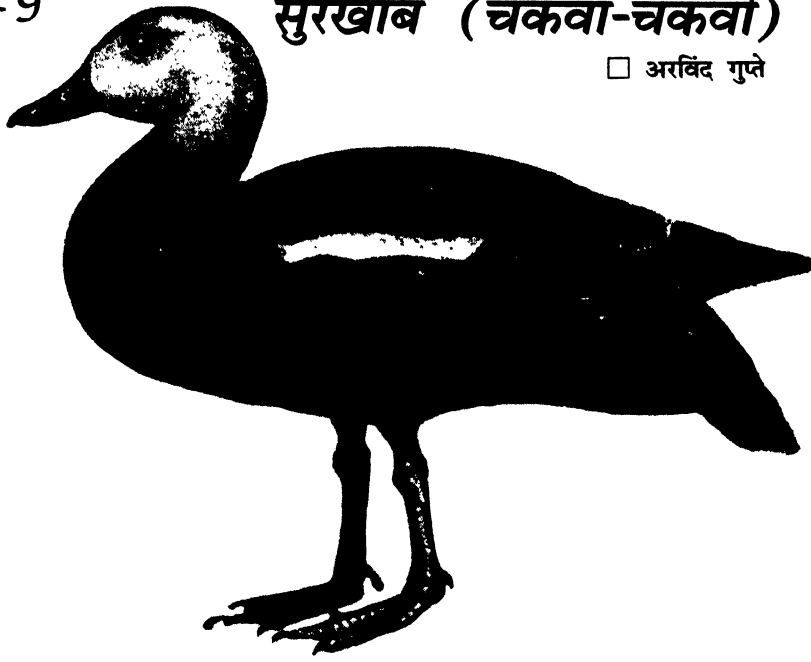
हमारे देश में विभिन्न जातियों की बत्तखें पाई जाती हैं। ठंड के मौसम में कई अन्य जातियों की प्रवासी बत्तखों के आ जाने से इनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है। प्रवासी बत्तखों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है सुरखाब। यह एक रंग-बिरंगी सुंदर बत्तख है। इसका लगभग पूरा शरीर सुनहरा या नारंगी-कत्थई होता है और सिर तथा गर्दन हल्के पीले रंग के। पंखों पर सफ़ेद, काला और हरा रंग होता है, जबकि इसकी पूंछ और चोंच काली होती हैं। नर और मादा में कोई अंतर नहीं होता।

इसके परों के रंग-बिरंगे और सुंदर होने के कारण कई देशों में सजावट के लिए धारण किया जाता है। शायद इसी कारण 'सुरखाब के पर लगना' मुहावरा बना है। जहां अन्य बत्तखें प्रायः बड़े झुंडों में रहती हैं वहीं सुरखाब नर और मादा जोड़े में रहना अधिक पसंद करते हैं। नर को चकवा और मादा को चकवी भी कहते हैं। ये बड़े चौकन्ने पक्षी होते हैं और मनुष्य की आहट पाते ही शोर मचाते हुए उड़ जाते हैं। इस प्रकार ये अन्य पक्षियों को भी सावधान कर देते हैं। ठंड के मौसम में चकवा-चकवी की 'कां-कों' 'कां-कों' आवाज़ रात भर सुनाई पड़ती है।

नर और मादा के जोड़े में साथ रहने के स्वभाव के कारण सुरखाब के बारे में कई किवदंतियां प्रचलित हैं। इनमें एक यह है कि चकवा-चकवी बिछुड़े हुए प्रेमियों की आत्माएं हैं जो रात भर एक-दूसरे को पुकारती रहती हैं। एक अन्य धारणा यह है कि रात में चकवा-चकवी अलग-अलग हो जाते हैं और फिर एक-दूसरे को पुकारते हुए दिन निकलने की प्रतीक्षा में रात गुज़ार देते हैं। ये सब हैं तो कपोल-कल्पनाएं, लेकिन इनके कारण बाल्मिकी से लेकर आधुनिक काल तक कई कवियों ने इस पक्षी को अपनी कविताओं में स्थान दिया है।

पक्षी विशेषज्ञ श्री राजेश्वर प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'भारत के पक्षी' में लिखा है कि उत्तरी बिहार में चकवा-चकवी से जुड़ा हुआ एक त्यौहार मनाया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा की रात को गांव की युवतियों कपड़े या मिट्टी से बनी चकवा-चकवी की मूर्तियां ले कर धान के खेतों में जाती हैं तथा चकवा-चकवी के गीत (जिन्हें श्यामा-चकेवा के गीत कहते हैं) गाती हैं। फिर इन मूर्तियों को नदी या तालाब में विसर्जित कर दिया जाता है और पानी में इनके साथ जलते हुए दिये छोड़े जाते हैं।

सुरखाब सर्वभक्षी है, यानि यह कोमल पौधे, अनाज की बालें, दाने, कीड़े, मेंढक, आदि सभी कुछ खा लेता है। यही कारण है कि ये पक्षी भोजन की तलाश में पानी में और ज़मीन पर दोनों जगह करते हुए देखे जाते हैं।

(चित्र सौजन्य : बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी) (पृष्ठ 31 पर जारी)
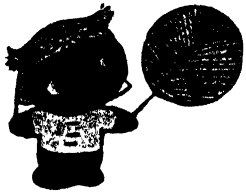
नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे

गुदड़ीलाल ने नया कोट पहना

रात हो चुकी थी। बिजली की बत्तियां जल चुकी थीं। गुदड़ीलाल के सोने का समय हो गया था। फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को टेबिल-लैंप के शेड के नीचे बिठा दिया। टेबिल-लैंप का शेड काफी बड़ा था। वह नन्हे गुड्डे के कमरे जैसा लग रहा था। फिङफिङ ने लकड़ी के कुछ ब्लॉक जोड़कर एक पलंग बना दिया और उस पर एक रूमाल चादर की तरह बिछा दिया। साथ ही छोटी-छोटी थैलियों में रूई भरकर गुड्डे के लिए गद्दा, लिहाफ़ और तकिया भी बना लिया। पूरा बिस्तर तैयार करने के बाद वह गुदड़ीलाल से बोली, "यह है तुम्हारा सोने का कमरा, तुम्हारा पलंग, तुम्हारा बिस्तर!"

फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को पलंग पर लिटाकर लिहाफ़ से अच्छी तरह लपेट दिया।
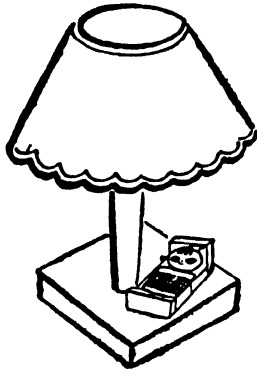
"अब आराम से सो जाओ," वह बोली। "रात को अच्छी तरह सोने के बाद कल सुबह हम जल्दी उठ जाएंगे। हाथ-मुंह धोने के बाद मैं तुम्हें अपने साथ शाला ले जाऊंगी।"

गुदड़ीलाल पलंग पर लेटकर बड़ा खुश हुआ। वह सचमुच कितना भाग्यशाली था! उसे कितना अच्छा घर मिल गया था! फिङफिङ के माता-पिता भी उसे बहुत पसंद थे। दोनों का स्वभाव बहुत अच्छा था। लेकिन फिङफिङ उसे सबसे अच्छी लगती थी। उसे बाकी लड़कियों की तरफ फूल, पाउडर आदि चीज़ें पसंद नहीं थीं। उसके पास बहुत से ऐसे मशीनी खिलौने थे जो लड़कों को पसंद होते हैं। उस दिन फिङफिङ ने गुदड़ीलाल के साथ अनेक ऐसे खेल जिन्हें अक्सर लड़के पसंद करते हैं। वे खेल गुदड़ीलाल को भी पसंद थे। हालांकि वह कपड़े का एक नन्हा-सा गुड्डा था, पर था तो एक लड़का ही।

पूरा दिन हंसते-खेलते बीत गया था। इसलिए गुदड़ीलाल काफ़ी थक गया था। फिर पिछली रात वह अच्छी तरह सो भी नहीं पाया था। इसलिए गरम-गरम बिस्तर पर लेटते ही उसकी आंख लग गई।

सुबह गुदड़ीलाल जल्दी उठ गया। वह फिङफिङ के साथ शाला जाना चाहता था। वहां बहुत से बच्चे होंगे। हो सकता है, उसकी मुलाकात काले भालू, बंदर या बाघ से भी हो जाए। एक ही दिन में उसे उनकी याद सताने लगी थी, हालांकि उसे डर था कि ये जानवर कहीं उसे डरपोक कहकर फिर न चिढ़ाने लगें। कमरे में कुछ गरमी थी, पर बाहर ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी और पेड़ों से लगातार सांय-सांय की आवाज़ आ रही थी।

फ़िङफिङ गुदड़ीलाल का बड़ा ख़्याल रखती थी। वह शाला जाने के लिए तैयार खड़ी थी। अचानक उसने पिताजी से पूछ लिया, "पापा, क्या एक हल्की-सी जाकिट पहनकर बाहर जाने से ठंड तो नहीं लग जाएगी?"

पहले पिताजी उसकी बात नहीं समझ पाए, क्योंकि फिङफिङ ने एक गरम कोट पहन रखा था। लेकिन ज्योंही उनकी नज़र गुदड़ीलाल पर पड़ी, उन्हें सारी बात समझ में आ गई।

"तुम बिलकुल ठीक कह रही हो," उन्होंने कहा। "जाड़ों में केवल हल्की जाकिट पहनकर बाहर निकलने से ठंड लग सकती है।"

"पापा, क्या आप गुदड़ीलाल के लिए एक अच्छा-सा कोट बना सकते हैं?"

"मैं?" पिताजी ने सिर हिलाकर असमर्थता व्यक्त की। "यही एक ऐसा काम है जिसे मैं नहीं कर सकता।"

यह सच था। फिङफिङ के पिताजी हालांकि कारखाने के एक कुशल कारीगर थे, फिर भी सिलाई करनी उन्हें नहीं आती थी।

"अगर हमें कोई काम न आए, तो क्या हमें उसे मेहनत से सीखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए?" फिङफिङ बोली।

"तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है! मुझे सीना-पिरोना सीख लेना चाहिए!" पिताजी ने कहा। "मैं कोशिश करूंगा। लेकिन फिलहाल मुझे एक मीटिंग में जाना है। वहां मुझे समय पर पहुंचना चाहिए। क्या यह काम तुम अपनी मां से नहीं करा सकतीं?"

पिताजी ने मुस्कराते हुए मां की तरफ देखा और बोले, "क्या ख़्याल है? क्या इस काम में तुम फिङफिङ की मदद नहीं करोगी?"

"कोट बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है!" मां ने कहा। "तुम इस लड़की को बिगाड़ रहे हो। फिङफिङ, तुम्हारे पास एक छोटा-सा गरम स्कार्फ भी तो है। गुदड़ीलाल को उसी में क्यों नहीं लपेट लेतीं?"

पिताजी ने देखा कि फिङफिङ इस सुझाव से खुश नहीं है।

"अच्छा, तो एक काम करते हैं। वोट लेकर देख लेते हैं!" उन्होंने राय पेश की। "जो लोग यह चाहते हैं कि मां को गुदड़ीलाल के लिए कोट बनाना चाहिए वे अपना हाथ खड़ा कर लें।"

यह कहकर पिताजी ने एकदम अपना हाथ खड़ा कर दिया। फिङफिङ ने भी हाथ खड़ा कर दिया। मगर मां ने अपना हाथ नीचे ही रखा।

"ठीक है," पिताजी ने कहा, "अल्पमत को बहुमत की बात माननी पड़ेगी!"

मां हंसी नहीं रोक पाई। कोट बनाने के लिए कपड़ा ढूंढती हुई वह बुदबुदाई, "तुम दोनों के राज में मेरी कौन सुनता है!"

आखिरकार नया कोट तैयार हो गया। उसे पहनकर गुदड़ीलाल शाला गया। कोट गहरे रंग के कपड़े से बनाया गया था। वह बहुत गरम, मुलायम और सुंदर था। उसे पहनकर गुदड़ीलाल बड़ा खुश हुआ।

मूल लेखक : सुन यओच्युन
अनुवादक : जानकी एवं श्यामा बल्लभ
सभी चित्र : शन फेई

(पृष्ठ 29 का शेष)

गर्मी के मौसम में ये पक्षी लद्दाख, तिब्बत, उत्तरी एशिया और यूरोप पहुंच जाते हैं, जहां ये प्रजनन भी करते हैं। किसी ऊंची पहाड़ी की कगार में या किसी घर की दीवाल में बने छेद में अपने स्वयं के कोमल पर बिछाकर ये घोंसला बनाते हैं। इसमें मादा 6 से 10 तक सफ़ेद, चमकीले अंडे देती है।

मज़ेदार बात यह है कि मैदानी इलाकों में मनुष्य से डरने वाले ये पक्षी लद्दाख और तिब्बत में मनुष्य पर इतना भरोसा करते हैं कि घरों के अंदर भी कभी-कभी घोंसला बना लेते हैं। इसका कारण यह है कि इन प्रदेशों में बौद्ध धर्म प्रचलित होने के कारण वहां के निवासी पक्षियों का शिकार नहीं करते हैं।

अक्टूबर-नवंबर में सुरखाब हिमालय को लांघकर भारत और पाकिस्तान के मैदानी इलाकों में पहुंचने लगते हैं। जुलाई 1959 में दक्षिणी रूस के किरगिज़ प्रदेश में सुरखाब के एक बच्चे के पैर में छल्ला डाला गया था। यह पक्षी उसी वर्ष अक्टूबर में लाहौर (पाकिस्तान) में पकड़ा गया। नक्शा देख कर पता करो कि किरगिज़ प्रदेश और लाहौर कहां हैं।

माथापच्ची

(1)
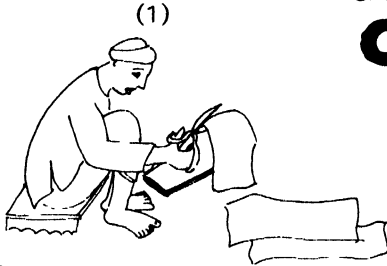
मान लो तुम्हारे पास 90 मीटर कपड़े का एक थान है। उसके एक-एक मीटर के टुकड़े करने हैं। अगर एक टुकड़ा काटने में 3 सेकण्ड लगते हैं तो 90 टुकड़े काटने में कितना समय लगेगा। टुकड़े एक-एक करके ही काटने हैं।

(2)

तारा के पास **अ** और **ब** दो डंडे हैं। **अ**, **ब** से दुगनी लंबाई का है। तारा ने **अ** और **ब** को बीच से काटकर दो-दो भागों में बांट दिया। फिर दोनों का एक-एक टुकड़ा जोड़कर एक तीसरा डंडा **स** बनाया। **स** डंडे की लंबाई **ब** डंडे से 15 सेंटीमीटर अधिक है। बताओ **अ** और **ब** की लंबाई क्या है?

(3)

पेड़ से गिरी पत्तियों के नीचे कितनी जोड़ी आंखें हैं?

(4)

योगेश नामदेव, छठवीं, देवनगर, नरसिंहपुर
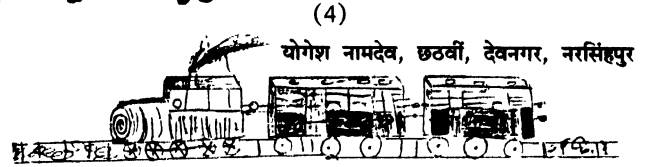
एक रेलगाड़ी जिसमें भाप का इंजन था, अपनी गति से चली जा रही थी। उसमें आमने-सामने दो आदमी बैठे थे। गाड़ी तेज़ चल रही थी और गाड़ी की खिड़की खुली हुई थी। गाड़ी ने एक सुरंग में प्रवेश किया और जब सुरंग से बाहर निकली तो आमने-सामने बैठे व्यक्तियों में से एक का चेहरा काला हो गया था, पर दूसरे का साफ़ था। क्षण भर बाद ही वह व्यक्ति जिसका चेहरा साफ़ था उठकर गया और अपना चेहरा धोने लगा। पर जिसका चेहरा काला था वह बैठा रहा। बता सकते हो ऐसा क्यों हुआ?

(5)

सलीम को इसकी टोपी उसके सर रखने में बड़ा मज़ा आता है। वह उधार मांगने में भी उस्ताद है। जब भी उसे पैसों की ज़रूरत होती है वह अपने दोस्तों को बातों के जाल में उलझाकर पैसे ले ही लेता है। ऐसी ही एक ज़रूरत के समय वह पहले अपने दोस्त गन्नू के पास पहुंचा और कहने लगा, 'अगर तुम मुझे उतने पैसे दो, जितने की मेरी जेब में हैं तो मैं तुम्हें पहले लिए हुए दस रुपए लौटा दूंगा।' गन्नू मान गया।

फिर सलीम कविता के पास गया उससे भी उसने वही कहा। वह भी मान गई। उसने उसे भी दस रुपए दिए और चल दिया।

इसी तरह सलीम, छन्नू और माइकल के पास गया और वही बात कही। उन दोनों ने भी उसे शर्त के मुताबिक पैसे दिए और उससे अपनी पुरानी उधारी के दस-दस रुपए वापस ले लिए।

अंत में सलीम के पास एक भी पैसा नहीं बचा। अब सवाल यह है कि सलीम की जेब में पहले कितने पैसे थे, उसने कितना कर्ज़ा चुकाया और अब भी उस पर कितना पैसा बाकी है

(6)

मुन्नी गुलाब के पौधों की दस कलमें लेकर आई। इनमें पांच सफ़ेद गुलाब की थीं और पांच विभिन्न रंगों की यानी-लाल, गुलाबी, केसरिया, पीला और काला। वह इन्हें अपने बगीचे में कुछ इस तरह लगाना चाहती है कि जब फूल खिलें तो बगीचा भी खिल उठे। उसके दिमाग में एक योजना है—

1. दसों गुलाब इस तरह लगाए जाएं कि उनकी कुल पांच पंक्तियां बनें,
2. प्रत्येक पंक्ति में चार गुलाब हों, और
3. प्रत्येक पंक्ति के चार गुलाबों में से बीच के दो सफेद रंग के हों पर पहला और चौथा अलग-अलग रंग के हों!

मुन्नी अभी सोच रही है। क्या तुम उसकी मदद करोगे?

विज्ञान - पहेलियां

चूने के संग गर्म किया यदि नौसादर
तो मैं लूंगी जन्म, प्रीस्टले हैं फादर
रंगहीन हूं, गंध तीक्ष्ण है और स्वाद क्षारीय
भीड़ भागती डरकर मुझसे किंतु हवा भारी!

●

दो गैसों का सम्मिश्रण हूं
बतलाओ तुम मेरा नाम
जग में मुझसे बड़ा न घोलक
आता हूं पीने के काम।

●

ठंडी लाल दवा पर पड़ता
जब-जब सांद्र नमक का अम्ल
तब-तब मैं पैदा होती हूं
करें परीक्षण जिनमें अक्ल!
रंग हरा-पीला है मेरा
है आदत जीवाणु-विरोधी!

☐ विनोद रस्तोगी, अटामांडा, बरेली

वर्ग पहेली - 27 का हल

बाएं से दाएं : 1. जनक 3. बीज गणित 6. मदार 7. किनारा 8. नक्शा 10. नवनीत 12. विचारक 15. आयन 17. असीम 18. लालच 19. सड़कछाप 20. रचना।

ऊपर से नीचे : 1. जयकिशन 2. कमरा 3. बीरबल 4. गगन 5. तमाशा 9. क्वार 11. वलय 13. कसमसाना 14. वार्तालाप 15. आवास 16. नमक 17. अचर।

वर्ग-पहेली -28
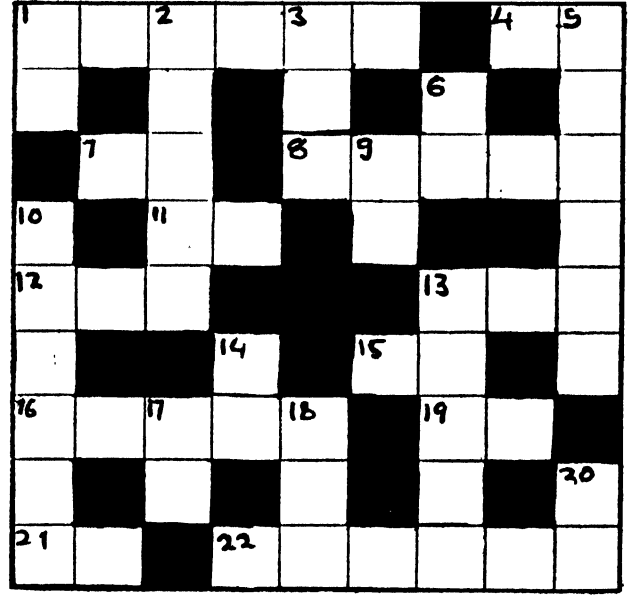
संकेत : बाएं से दाएं

1. बादल की गरज़ वाले भारतीय वैज्ञानिक (4,2)
2. उपासना में नज़दीक (2)
7. लेखन सामग्री कहो या पहिया (2)
8. जीन हवस को गड़बड़ करो तो साथ-साथ जीना (2,3)
11. पड़ौसी देश की मुद्रा (2)
12. रंग + ना याने परास्त करना (3)
13. विक्षिप्त हाथी का सिर पाल में! (3)
15. कहते हैं इसको कोई नहीं टाल सकता (2)
16. पर्त व रग्न का टकराकर लौटना (5)
19. रोब मारने में विस्फोटक (2)
21. ललाट का मध्य निकालकर बाल-बाल बचे (2)
22. अगर बरसा उल्टा-सीधा तो समंदर बन जाएगा (3,3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. खेत के किनारे (2)
2. नाना कटक में! गड़बड़ की तो इज्ज़त गई (2,3)
3. मौसा रस के अंदर पक्षी ढूंढेंगे (3)
5. बर्दाश्त करने की ताकत (6)
6. हरी पत्तेदार सब्ज़ी (2)
9. उल्टे रास्ते का रंग (2)
10. लोगों का आना-जाना, भीड़-भाड़ या यूं कहें हल धन च, हल धन प (3-3)
13. बरसात में क्या हुआ? (2,3)
14. ताली देकर हार-जीत की लगाओ... (2)
17. उल्टी लाश (2)
18. शहर (3)
20. किनारा, पहला आधा पास, बाद का आधा दूर (2)

खेल कागज़ का
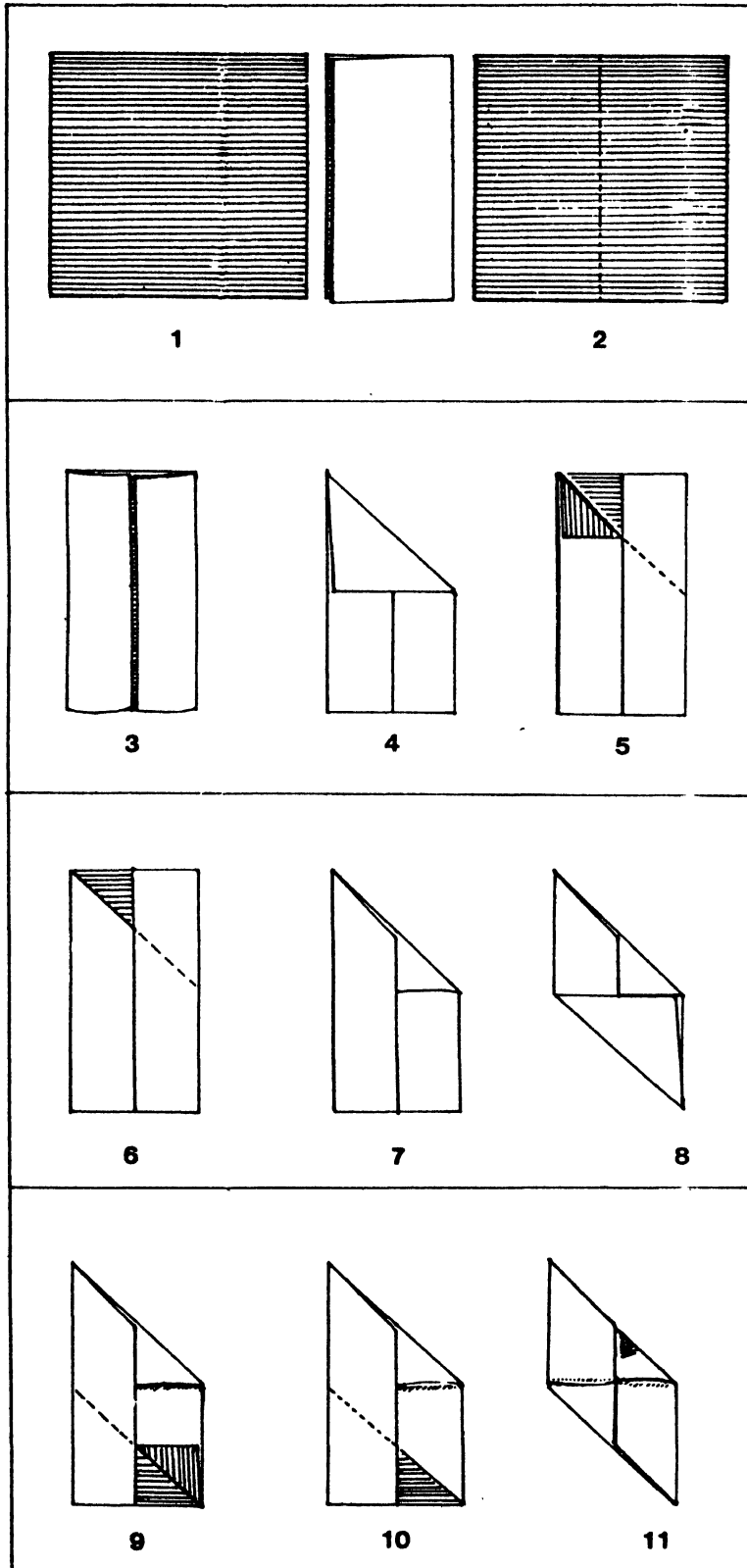
समानांतर चतुर्भुज

इस बार समानांतर चतुर्भुज की एक मज़ेदार रचना बनाते हैं। एक चौकोर काग़ज़ लो (चित्र-1) और उसे बीचोंबीच से मोड़ो (चित्र-2)। अब चौकोर के दोनों किनारों को मध्य रेखा तक मोड़ो, जिससे एक खड़ा आयत बन जाए (चित्र-3)। अब ऊपरी दाएं कोने को आधे में मोड़ो (चित्र-4)। इस मोड़ को दुबारा खोलो। खोलने पर तुम्हें एक छोटा त्रिकोण दिखाई देगा (चित्र-5)। इस छोटे त्रिकोण को अंदर की ओर मोड़ दो (चित्र-6)। अब ऊपरी दाएं कोने को मोंड़कर बाएं आयत की परतों के बीच घुसा दो (चित्र-7)।

इसी तरीके को निचले बाएं कोने पर अपनाओ। पहले उसे आधे में मोड़ो (चित्र-8)। मोड़ को खोलो (चित्र-9)। अब छोटे त्रिकोण को अंदर की ओर मोड़ दो (चित्र-10)। अब निचले बाएं कोने को दाएं आयत की परतों के बीच घुसा दो (चित्र-11)।

इस तरह मोड़कर जो आकृति बनेगी वह एक समानांतर चतुर्भुज की होगी। यह आकृति अपने आप खुलेगी नहीं, क्योंकि इसमें एक तरह का ताला लगा है। इस समानांतर चतुर्भुज की एक सतह पूरी तरह सपाट है, जबकि इसकी दूसरी सतह पर चार जेब हैं।

□ अरविंद गुप्ता

कथा सम्राट प्रेमचंद की एक प्रसिद्ध कहानी

नमक का दरोग़ा

जब नमक का नया विभाग बना और प्रकृति द्वारा प्रदान की गई वस्तु के व्यवहार करने की मनाही हो गई तो लोग चोरी छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़ कर लोग इस विभाग में आना चाहते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का जी भी ललचता था। यह वह समय था जब अंगरेज़ी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फ़ारसी का बोलबाला था। प्रेम की कथाएं और श्रृंगार रस के काव्य पढ़ कर फारसी दां लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे। मुंशी वंशीधर भी जुलेखा की विरह-कथा समाप्त करके मंजनू और फरहाद के प्रेम-वृत्तांत को नल और नील की लड़ाई और अमेरिका के आविष्कार से अधिक महत्त्व की बातें समझते हुए रोज़गार की खोज में निकले।

उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे, "बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियां हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूं, न मालूम कब गिर पड़ूं। अब तुम्हीं घर के मालिक मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह, चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूंढ़ना जहां कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसमें बरकत होती है। तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊं। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो करो। ग़रज़ वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ-ही-लाभ है। लेकिन बेग़रज़ को दांव पर पाना ज़रा कठिन है। इन बातों को निगाह में बांध लो। यह मेरी जन्म भर की कमाई है।"

इस उपदेश के बाद पिता जी ने आशीर्वाद दिया। वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे। ये बातें ध्यान से सुनीं और तब घर से चल खड़े हुए। इस बड़े संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथदर्शक और आत्मविश्वास ही अपना सहायक था। लेकिन अच्छे शकुन से चले थे, जाते-ही-जाते नमक-विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गए। वेतन अच्छा और ऊपरी आय का तो ठिकाना ही न था। वृद्ध मुंशी जी को सुख-संवाद मिला तो फूले न समाए। महाजन लोग

चकमक के पाठकों को ध्यान में रखकर इस कहानी के कुछ कठिन शब्दों या वाक्यों को थोड़ा परिवर्तित किया है। ऐसा करते हुए इस बात की भरसक कोशिश की है कि कहानी की मूल भावना को कोई हानि न हों। —संपादक

कुछ नरम पड़े।पड़ोसियों के हृदय में शूल उठने लगे।

○

जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर को यहां आए अभी छः महीनों से अधिक न हुए थे, लेकिन इस थोड़े समय में ही उन्होंने अपनी कार्य-कुशलता और उत्तम आचार से अफ़सरों को मोहित कर लिया था। अफ़सर लोग उन पर बहुत विश्वास करने लगे। नमक के दफ़्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोग़ाजी किवाड़ बंद किए मीठी नींद सो रहे थे। अचानक आंख खुली तो नदी के बहने की आवाज़ की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया। उठ बैठे। इतनी रात गए गाड़ियां क्यों नदी के पार जाती हैं? अवश्य कुछ-न-कुछ गोल माल है। तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया। वरदी पहनी, तमंचा जेब में रखा और बात-की-बात में घोड़ा बढ़ाए हुए पुल पर आ पहुंचे। गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल के पार जाते देखी। डांटकर पूछा, "किसकी गाड़ियां

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कुछ कानाफूसी हुई, तब आगे वाले ने कहा, "पंडित अलोपीदीन की।"

"कौन पंडित अलोपीदीन?"

"दातागंज के।"

मुंशी वंशीधर चौंके। पंडित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। लाखों रुपए का लेन-देन करते थे, इधर छोटे से बड़े कौन ऐसे थे जो उनके ऋणी न हों। व्यापार भी बड़ा लंबा-चौड़ा था। बड़े चलते-पुरजे आदमी थे। अंगरेज़ अफ़सर उनके इलाक़े में शिकार खेलने आते और उनके मेहमान होते। बारहों मास सदाव्रत चलता था।

मुंशी जी ने पूछा, "गाड़ियां कहां जाएंगी?" उत्तर मिला, "कानपुर।" लेकिन इस प्रश्न पर कि इनमें है क्या, फिर सन्नाटा छा गया। दारोग़ा साहब का संदेह और भी बढ़ा। कुछ देर तक उत्तर की बाट देखकर वह ज़ोर से बोले, "क्या तुम सब गूंगे हो गए हो? हम पूछते हैं, इनमें क्या लदा है?"

जब इस बार भी कोई उत्तर न मिला तो उन्होंने घोड़े को गाड़ी से मिलाकर बोरे को टटोला। भ्रम दूर हो गया। यह नमक के ढेले थे।

○

पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार, कुछ सोते कुछ जागते चले आते थे। अचानक कई गाड़ीवानों ने घबराए हुए आकर जगाया और बोले, "महाराज! दारोग़ा ने गाड़ियां रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुलाते हैं।"
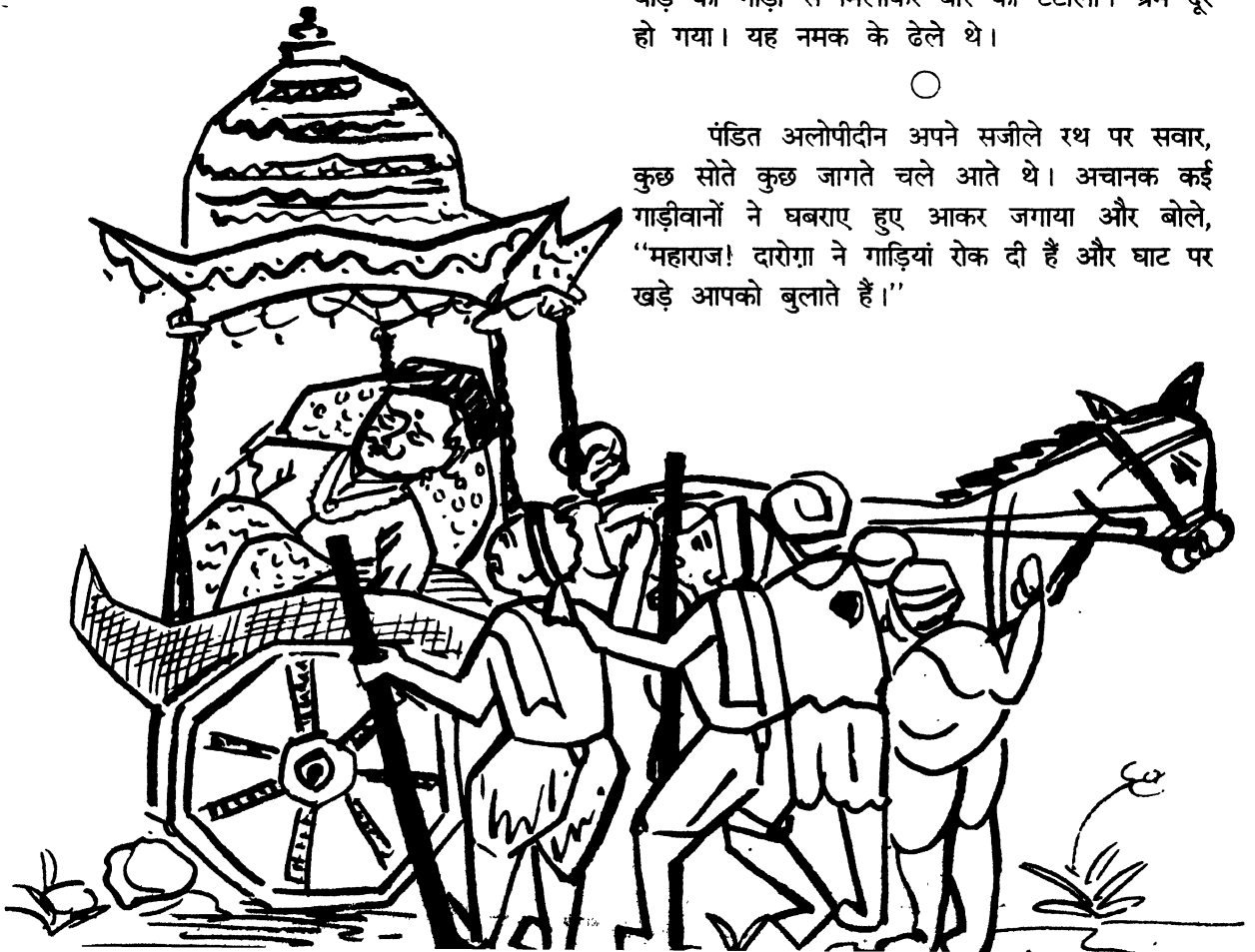
पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ में ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं नचाती हैं। लेटे-ही-लेटे गर्व से बोले, "चलो हम आते हैं।" यह कह कर पंडितजी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ़ ओढ़े हुए दारोग़ा के पास आकर बोले, "बाबूजी आशीर्वाद, कहिए, हमसे ऐसा कौन सा अपराध हुआ कि गाड़ियां रोक दी गईं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा दृष्टि रहनी चाहिए।"

वंशीधर रुखाई से बोले, "सरकारी हुक्म!"

पं. अलोपीदीन ने हंसकर कहा, "हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है; हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं। आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएं और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ाएं। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था।"

वंशीधर पर इस प्रलोभन का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नई उमंग थी। कड़ककर बोले, "हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। सवेरे आपका क़ायदे के अनुसार चालान होगा। बस; मुझे अधिक बातों की फ़ुर्सत नहीं है। जमादार बदलूसिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूं।"

पं. अलोपीदीन स्तब्ध हो गए। गाड़ीवानों में हलचल मच गई। पंडित जी के जीवन में शायद यह पहला ही अवसर था कि उन्हें ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। बदलूसिंह आगे बढ़ा, किंतु रोब के मारे यह साहस न हुआ कि उनका हाथ पकड़ सके। पंडित जी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। विचार किया कि यह अभी उद्दंड लड़का है। माया-मोह के जाल में अभी नहीं पड़ा। अल्हड़ है, झिझकता है। बहुत दीन-भाव से बोले, "बाबू साहब, ऐसा न कीजिए, हम मिट जाएंगे! इज़्ज़त धूल में मिल जाएगी। हमारा अपमान करने से आपके क्या हाथ आएगा। हम किसी तरह आपसे बाहर थोड़े ही हैं!"

वंशीधर ने कठोर स्वर में कहा, "हम ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते हैं।"

अलोपीदीन ने जिस सहारे को चट्टान समझ रखा था, वह पैरों के नीचे खिसकता हुआ मालूम हुआ। स्वाभिमान और ऐश्वर्य को कड़ी चोट लगी। किंतु अभी तक धन की शक्ति का पूरा भरोसा था। अपने मुख़्तार से बोले, "लालाजी, एक हज़ार के नोट बाबू साहब को भेंट करो, आप इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं।"

वंशीधर ने गरम होकर कहा, "एक हज़ार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।"

धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और त्याग पर मन बहुत झुंझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछल कर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पांच, पांच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हज़ार तक नौबत पहुंची, किंतु वंशीधर टस से मस न हुए।

अलोपीदीन निराश होकर बोले, "अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।"

वंशीधर ने अपने जमादार को ललकारा। बदलूसिंह मन में दारोग़ा जी को गालियां देता हुआ पंडित अलोपीदीन की ओर बढ़ा। पंडित जी घबड़ाकर दो-तीन क़दम पीछे हट गए। अत्यंत दीनता से बोले, "बाबू साहब ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए, मैं पच्चीस हज़ार पर निपटारा करने को तैयार हूं।"

"असंभव बात है।"

"तीस हज़ार पर?"

"क्या चालीस हज़ार पर भी नहीं?"

"चालीस हज़ार नहीं, चालीस लाख पर भी असंभव है। बदलूसिंह, इस आदमी को अभी हिरासत में ले लो। अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।"

धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला। अलोपीदीन ने एक हृष्ट-पुष्ट मनुष्य को हथकड़ियां लिए हुए अपनी तरफ आते देखा। चारों ओर निराशा और कातर दृष्टि से देखने लगे। इसके बाद यकायक मूर्छित होकर गिर पड़े।

○

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे ही देखिए तो बालक-वृद्ध सब के मुंह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए वही पंडितजी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का

पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, झूठे रोज़नामचे भरने वाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफ़र करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज़ बनाने वाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भांति गर्दनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियां, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाए अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में शायद आंखें इतनी व्यग्र न होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

किंतु अदालत में पहुंचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अपार वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख़्तार उनके आज्ञा-पालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह क़ानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास कोई भी मुश्किल हल करने वाला धन और मीठी ज़बान हो वह क्यों क़ानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के लिए वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे, किंतु लोभ से डावांडोल।

यहां तक कि मुंशी जी को न्याय भी अपनी ओर से कुछ खिंचा हुआ दीख पड़ता था। वह न्याय का दरबार था, परंतु उसके कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया हुआ था। किंतु पक्षपात और न्याय का क्या मेल? जहां पक्षपात हो, वहां न्याय की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मुकद्दमा शीघ्र ही समाप्त हो गया। डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने अपने फैसले में लिखा, पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध दिए गए प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं। वह एक बड़े भारी आदमी हैं। यह बात कल्पना से बाहर है कि उन्होंने थोड़े लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस किया हो। यद्यपि नमक के दारोग़ा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है, लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उनकी उद्दंडता और विचारहीनता के कारण एक भलेमानुस को कष्ट झेलना पड़ा। हम प्रसन्न हैं कि वह अपने काम से सजग और सचेत रहता है,. किंतु नमक के मुकद्दमे की बढ़ी हुई नमकहलाली ने उसके विवेक और बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिए।

वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। पंडित अलोपीदीन मुस्कराते हुए बाहर निकले। खूब रुपया लुटाया! उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर से उनके ऊपर व्यंगबाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक-झुककर सलाम किए। किंतु इस समय एक-एक कटुवाक्य, एक-एक संकेत उनकी गर्व की अग्नि को प्रज्वलित कर रहा था। हो सकता था इस मुकद्दमे में सफल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लंबी चौड़ी उपाधियां, बड़ी-बड़ी दाढ़ियां और ढीले चोगे एक भी सच्चे आदर के पात्र नहीं हैं।

वंशीधर ने धन से वैर मोल लिया था, उसका

मूल्य चुकाना अनिवार्य था! कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुंचा। कार्यपरायणता का दंड मिला। बेचारे दुःखी मन से घर को चले। बूढ़े मुंशीजी तो पहले ही से कुड़-बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी। बस मनमानी करता है। हम तो महाजन के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहां बस वही सूखी तनख़्वाह! हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन काम किया, दिल खोल कर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अंधेरा, मस्जिद में अवश्य दिया जलाएंगे। खेद है ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब बेकार गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस बुरी हालत में घर पहुंचे और बूढ़े पिता जी ने यह समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले, जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूं। बहुत देर तक पछता-पछता कर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहां से टल न जाते तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्धा माता को भी दुःख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएं मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने तो कई दिन तक सीधे मुंह से बात भी नहीं की।

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। बूढ़े मुंशी जी बैठे राम-नाम की माला जप रहे थे। इसी समय उनके द्वार पर एक सजा हुआ रथ आकर रुका। हरे और गुलाबी परदे, पछहियें बैलों की जोड़ी, उनकी गर्दनों में नीले धागे, सींगें पीतल से जड़ी हुई। कई नौकर लाठियां कंधों पर रखे साथ थे। मुंशी जी अगवानी को दौड़े। देखा तो पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर दंडवत की और लल्लोचप्पो की बातें करने लगे, "हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वार पर आए। आप हमारे पूज्य देवता हैं, आपको कौन-सा मुंह दिखाएं। मुंह में तो कालिख लगी हुई है। किंतु क्या करें, लड़का अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्यों मुंह छिपाना पड़ता? ईश्वर निस्संतान चाहे रक्खे, पर ऐसी संतान न दे।"

अलोपीदीन ने कहा, "नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिए।"

मुंशीजी ने चकित होकर कहा, "ऐसी संतान को और क्या कहूं?"

अलोपीदीन ने प्रेम भरे स्वर में कहा, "कुलतिलक और पुरुषों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें?"

पं. अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा, "दारोग़ाजी, यह खुशामद करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की ज़रूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार-बल से मुझे अपनी हिरासत में लिया था, किंतु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूं। मैंने हज़ारों रईस और अमीर देखे, हज़ारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा किंतु मुझे परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बना कर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिए कि आपसे कुछ विनय करूं।"

वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा तो उठकर सत्कार किया, किंतु स्वाभिमान सहित। समझ गए कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आए हैं। क्षमा-प्रार्थना की चेष्टा नहीं की, वरन् उन्हें अपने पिता की यह ठकुरसुहाती की बात असह्य-सी प्रतीत हुई। पर पंडित जी की बातें सुनीं तो मन की मैल मिट गई। पंडित जी की ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा। सद्भाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सिर झुका दिया। शर्माते हुए बोले, "यह आपकी उदारता है जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूं। जो आज्ञा होगी, वह मेरे सिर-माथे पर।"

अलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा, "नदी के तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं स्वीकार की थी, किंतु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।"

वंशीधर बोले, "मैं किस योग्य हूं; किंतु जो कुछ सेवा मुझसे हो सकती है उसमें त्रुटि न होगी।"

अलोपीदीन ने एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र निकाला और उसे वंशीधर के सामने रखकर बोले, "इस पद को स्वीकार कीजिए और अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। मैं ब्राह्मण हूं, जब तक यह सवाल पूरा न कीजिएगा, द्वार से न हटूंगा।"

मुंशी वंशीधर ने उस काग़ज़ को पढ़ा तो कृतज्ञता से आंखों में आंसू भर आए। पंडित अलोपीदीन ने

उन्हें अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया था। छः हज़ार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोज़ाना ख़र्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने को बंगला, नौकर-चाकर मुफ़्त। कंपित स्वर से बोले, "पंडित जी, मुझ में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी इस उदारता की प्रशंसा कर सकूं! किंतु मैं ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं हूं।"

आलोपीदीन हंसकर बोले, "मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही ज़रूरत है।"

वंशीधर ने गंभीर-भाव से कहा, "यों मैं आपका दास हूं। आप जैसे कीर्तिवान, सज्जन पुरुष की सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। किंतु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह अनुभव जो इन त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए एक बड़े मर्मज्ञ अनुभवी मनुष्य की ज़रूरत है।"

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले, "न मुझे विद्वत्ता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य-कुशलता की। इन गुणों में महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूं। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए, अधिक सोच-विचार न कीजिए, दस्तख़त कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला, बेमुरौवत, उद्दण्ड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोग़ा बनाए रखे।"

वंशीधर की आंखें डबडबा आईं। हृदय के संकुचित पात्र में इतना एहसान न समा सका। एक बार फिर पंडित जी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और कांपते हुए हाथ से मैनेजरी के काग़ज़ पर हस्ताक्षर कर दिए।

अलोपीदीन ने खुश होकर उन्हें गले लगा लिया।

(हंस प्रकाशन के सौजन्य से)
सभी चित्र : प्रीति भटनागर

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्त्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण :

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.

संपादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्त्व है : रेक्स डी रोज़ारियो, एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–462 016.

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

जनवरी, 1990

आकांक्षा पचबीये , पांच वर्ष, कांकेर, बस्तर